Year-77

अगर-मगर छाप

# नये वर्ष के दृढ़ संकल्प





आप हर वर्ष नये वर्ष में करने के लिये कोई न कोई संकल्प करते हैं। परन्तु यह सबको पता है कि नये वर्ष के लिये किया गया संकल्प पूरा करना कठिन होता है। बाद में टूट जाता है और दिल को अपनी असफलता पर दुख होता है। हम आपको इस बार इस प्रकार के बेकार के दुख को दूर रखने के उपाय बता रहे हैं। आप हमारे बताये ढंग से नये वर्ष का संकल्प करें। आपको संकल्प पूरा करने के लिये न ही मेहनत करनी पड़ेगी और न ही आपका प्रण टूटेगा।

## १९७७ के संकल्प

**मैं सिगरेट नहीं पिऊंगा**

यदि वैज्ञानिकों ने साबित कर दिया कि तम्बाकू में विटामिन ए और डी होते हैं
न यह कभी होगा न आपको सिगरेट छोड़नी पड़ेगी

**मैं सिगरेट नहीं पिऊंगा**

जितनी देर मेरी पत्नी बात नहीं करेगी
न पत्नी कभी चुप होगी न आपका सिगरेट पीना बन्द

**मैं अपने पति से नहीं झगड़ूंगी**

यदि झगड़ा रोडेशिया को लेकर खड़ा हो तो
(पति-पत्नी के झगड़े तो किसी और बात पर ही होंगे)

**मैं शॉपिंग में पैसे बर्बाद नहीं करूंगी**

जिन दिनों दुकानें बन्द होंगी

**मैं दोस्तों से गपशप में समय बर्बाद नहीं करूंगा**

पत्नी को तो इससे कोई लाभ नहीं होगा क्योंकि आप दोस्तों से गप्पें बेशक न लड़ायें परन्तु सीधे प्रेमिका के पास तो जायेंगे ही

**नये वर्ष में मैं मन लगाकर काम करूंगा**

यदि मुझे हीरो बनने का चांस मिले
न आप कभी हीरो बनेंगे न काम में मन लगाने की बारी आयेगी

**आगामी वर्ष हर महीने जेब खर्च में से पांच रुपये बचाऊंगा**

यदि बीबी ने जेब खर्च में दस रुपये बढ़ोत्तरी की तो देखा? पांच रुपये फालतू खर्च का प्रोवीजन भी रहा और बचत करने का नाटक भी दिल को समझाना ही तो है



**मैं पड़ौसिन से लड़ूंगी नहीं**
झगड़ने के बारे में मैंने कुछ नहीं कहा

**नये वर्ष में टी० वी० खरीदूंगा**
यदि टी० वी० का धंधा ससुर करें तो
खरीदूंगा भी तो ससुर पैसे थोड़े ही मांग सकेगा?

**मैं सड़क के नियमों का पूरी तरह पालन करूंगा**
सफर बस में करता हूं. सड़क के नियम अपने आप पालन होते रहेंगे

**अपने से बड़ों का पूरी तरह आदर करूंगा, रोज सुबह मैं पैर छुऊंगा**
मेरी उम्र १००वर्ष है। अपने से बड़ा कौन मिलेगा?

---

**मैं वर्ष भर रोज पूरा होमवर्क करूंगा**
क्यों नहीं? मैं हीरो हूं। होमवर्क का मतलब हुआ रोमांस, सो ऐसे होमवर्क को करने में मुझे क्या परेशानी होगी?

**मैं बाजार की चाट पकौड़ी नहीं खाऊंगी**
यद्दि चाट-पकौड़ी वाले ने मुझसे विवाह कर लिया तो फिर तो घर में ही चाट-पकौड़ी बना करेगी।

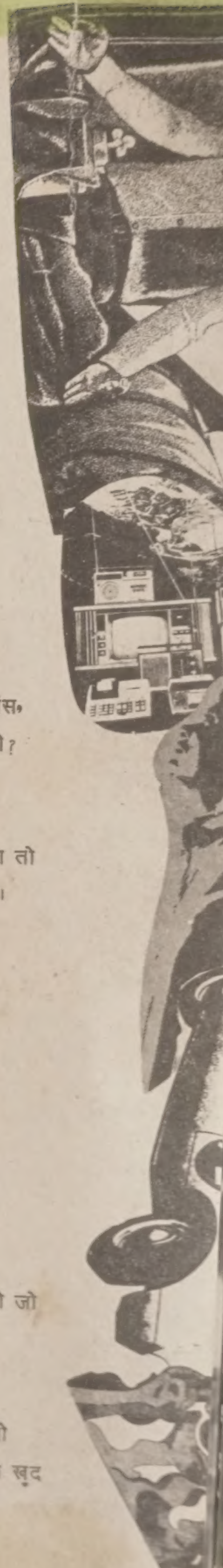
**नये वर्ष में स्टीरियो रेडियोग्राम लेना है**
यदि मेरे नाम लाटरी निकले तो

**मैं १९७७ में गाड़ी रैश नहीं चलाऊंगा**
गाड़ी है ही कहाँ?

**मैं ब्लैक में टिकटें नहीं खरीदूंगा**
यदि खिड़की पर टिकटें मिल रही हों तो

**मैं दोस्तों से उधार नहीं मांगूंगा**
देने भी कौन लगा है? पिछले सालों में दोस्तों को जो चूना लगाया है उससे वे चेत गये हैं

**मैं इम्पोर्टेड माल नहीं खरीदूंगी**
यदि पति की अमरीका में नौकरी लग गयी तो इम्पोर्टेड खरीदने का प्रश्न ही नहीं उठता। आप खुद ही एक्सपोर्ट हो रही हैं







**मैं सदा सच बोलूंगा**

(अपना नाम बदल कर सदा सच बोलूंगा रख लो)

**बच्चों को झिड़की नहीं दूंगा**

(पिटाई करने का प्रोवीजन रखा है)

**मैं १९७७ में रिश्वत नहीं लूंगा**

(ठेकेदारी का काम करूंगा। वहां रिश्वत देना ही देना होता है, लेना नहीं)

**मैं सुबह जल्दी उठ जाया करूंगा**

यदि पड़ोस में कोई गायक आकर बस गया तो (वह हारमोनियम बजा कर अपने आप उठा दिया करेगा)

**मैं हर उस रोज सुबह सैर करने जाया करूंगा**

(जब-जब सूरज पश्चिम से निकलेगा)

**मैं मांस खाना छोड़ दूंगा**

(क्योंकि छोड़ना है इसलिये इस वर्ष से खाना शुरू कर दूंगा। पहले नहीं खाता था, नये वर्ष का संकल्प तो पूरा करना ही है)

**मैं घटिया नावल पढ़ना छोड़ दूंगा**

(जितने घटिया नावल हैं वे सब पढ़ चुके हो। अब कोई चारा नहीं है)

**गली के कुत्तों को पत्थर नहीं मारूंगा**

(इसीलिये तो बन्दूक खरीद ली है)

**इस वर्ष परीक्षा में अवश्य प्रथम आऊंगा**

यदि सारे दूसरे लड़के दूसरे स्कूल में चले जायें। (अकेले की कक्षा में प्रथम आना बड़ी हिम्मत का काम है)

**कोई पीरियड मिस कर पिक्चर नहीं देखूंगा**

(प्रेमी या प्रेमिका के साथ डिस्को जाने में ज्यादा आनन्द है पिक्चर देखना तो रंगरूटों का काम है)

**बगैर टिकट लिये बस में सफर नहीं करूंगा**

(यह मैंने कब कहा कि बस की टिकट लूंगा? डाकघर से टिकट लेकर बस में बगैर टिकट सफर कर सकता हूं, टिकटें विविध भारती को फर्माइश भेजने के काम आयेंगी)



# अर्थ अनर्थ

'एक नजर में पढ़िये और दो-दो मजे लूटिये !

**आशु मेहता—इन्दौर**

● राजेश ने प्रदीप से कहा, "अरे यार तू खतरा मोल मत लेना।'
**(मुफ्त मिले तो बेशक ले लेना…।)**

● 'अरे बेटा फ्रिज मत बन्द करना, मैं आ रही हूं", मां ने आवाज लगाते हुए कहा।
**(क्या मांताजी फ्रिज में पूरी समा पायेंगी?)**

**प्रवीण कुमार—इन्दौर**

● मेहमान मेजबान से, "आप तकलीफ न करें मैं आपकी थाली में ही बैठ जाऊंगा।"
**(थाली में जगह कम पड़े तो कटोरे में बैठ जाना।)**

**प्रहलाद शर्मा—डिब्रूगढ़**

● "अरब में छः अरब नेताओं की बैठक होगी।"
**(इतने सारे नेता कौन से हाल में बैठेंगे ?)**

**मनेन्द्र सिंह बग्गा—जयपुर**

● एक गिरजा घर में होने वाले व्याख्यान की विज्ञप्ति नोटिस बोर्ड पर यूं लिखी गई :—

"नाटक कैसा है ? यह जानने के लिये आप अन्दर आइये।"
**(यह मरने से पहले ही नर्क भुगतवाना चाहते हैं क्या ?)**

**गोबिन्द दास—अजमेर**

● एक साहब लतीफा सुना रहे थे—"एक गधा था…" तभी कुछ लोग बीच में बातें करने लगे तो एक सज्जन उन्हें चुप कराते हुए बोले। "भाइयों गधे की बात सुन लो।
**(कौन से गधे की बात सुनें लतीफा सुनाने वाले की या…।)**

**पाँडेय विजय—बम्बई—४०००३३**

● डाक्टर ने मरीज से कहा, "यह दवा खाने के बाद खाना।"
**(दवा खाने के बाद खानी है या दवा पहले खाना बाद में ?)**

● एक डाक्टर के बोर्ड के बराबर में लिखा था "ऊपर जाने का मार्ग इधर है।"
**(लगता है यह डाक्टर यमराज का एजेन्ट है)**

**जगजीत सिंह राणा—दिल्ली-३५**

● एक ट्रक के पीछे लिखा था, "कृपया हार्न दीजिये।"
**(हार्न इसे दे दें तो बजायेंगे क्या ?)**

**राजीव श्रीवास्तव—दुर्ग**

● मां बेटे से बोली, "जा साइकिल उठाकर बाजार चला जा।"
**(साइकिल का वजन उठा कर जाने से बेहतर है अकेला चला जाऊं।)**

● मां, "बेटा दर्जी को सीना है कपड़ा दे दो।"
**(दर्जी कपड़ा सियेगा या दर्जी की ही सिलाई होगी ?)**

**नेहल अहमद—पटना**

● कल रात मैं अलमारी में कागज बिछा कर सोया।
**(साफ़-साफ बताओ कि तुम अल्मारी में सोये थे।)**

**गोबिन्द सरन—आगरा**

● बीस साल पुरानी अचार की दुकान।
**(तब तो यहाँ सड़ा हुआ अचार मिलता होगा ?)**

## सर्वश्रेष्ठ वाक्य

**प्रमोद कुमार दुबे, आनन्द निकेतन गंज बासौदा जि० विदिशा (म० प्र०)**

● डाक्टर की दुकान पर लिखा था, "बेंच पर चप्पल-जूते उतार कर बैठें।"
**(कहाँ बैठें ? जमीन पर या जूते-चप्पलों के ऊपर ?)**




**नरेन्द्र गोकलानी—ब्यावर**

● एक रात किसी घर में चोर चिल्लाया "मामाजी चोर, मामाजी चोर !
**(क्या मामा जी ही चोर है या कोई और?)**

**रमेश उगेला—नई दिल्ली**

● एक मोटर में ड्राइवर की सीट के पीछे लिखा था, "इस सीट को छूना मना है
**(ड्राइवर अगर सीट पर बैठेगा नहीं तो गाड़ी कौन चलायेगा ?)**

**वीना बेरी—जालन्धर शहर**

● एक लड़का दुकानदार से बोला "कल तुमने जो अण्डे दिये थे वे सब बेकार थे।
**(क्या मुर्गियों के बजाय अब यह काम दुकानदारों ने ही शुरू कर दिया है ?)**

**राजेन्द्र कुमार—जयपुर**

● एक व्यक्ति दूसरे से, "तेरा मकान कहां है ?" दूसरा, "मैंने तो सीताराम को बेच दिया।"
**(सीताराम को बेच दिया है या अपने मकान को ?)**

● "पागल डाक्टर सुरेश को घूर रहा था।"
**(क्या पागल डाक्टर भरती होने लगे हैं ?)**

● "एक प्लेट रबड़ी लाओ" सुन्दर ने वेटर से कहा।
**(शीशे की प्लेट के बजाय क्या अब रबड़ी की…)**

**ज० सिंह—दिल्ली**

● "अपना कूड़ा सड़क पर मत फेंकिये।
**(पड़ोसियों का बेशक फेंक दीजिये…)**

**विजय कुमार व्यास—नेमावर (म० प्र०)**

● मुर्गी अण्ड देती है या बच्चा ?
**(मुर्गी अण्डे देते सुना है परन्तु बच्चे को अण्डे देते…)**

**अगस्तिन स्वामी—हजारी बाग**

● कण्डेक्टर ने टिकट काटते हुए कहा "तुम्हें पूरा और इस बच्चे को आधा काटता हूं।"
**(यह कण्डेक्टर है या कसाई ?)**

सर्वश्रेष्ठ अर्थ-अनर्थ पर 5 रू० का नगद पुरस्कार दिया जायेगा। सं०

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें

अर्थ-अनर्थ
दीवाना साप्ताहिक
८-ब बहादुर शाह जफ मार्ग
नई दिल्ली—११०००२



दीवाना पंचतंत्र
वाह, कव्वा मुँह में रोटी लिये डाल पर वैठा है। मैं इससे उसी तरकीव से रोटी छीन लेता हूं जैसे मेरे दादा जी ने इसके वेवकूफ दादा से छीनी थी। इसके गाने की तारीफ।
मेरे धन भाग्य! आज तानसेन मियां के दर्शन हो गये। जव से सहगल साहव गुजरे गजलें सुनने का मजा ही गया। मियां, आपने इस फैन की फर्माइश तो पूरी करो, एक फड़कती हुई गजल सुना कर मेरा जीवन सार्थक करो। सहगल के वाद वस तुम ही हो, क्या गला पाया है!
कौन आर्टिस्ट अपने फैन की फर्माइश पूरी नहीं करता? मैं तुम्हें दरवारी काकाकाकान्हड़ा सुनाऊंगा सुनो!
इरशाद इरशाद!
क्या वात हो गयी रोटी गिरी क्यों नहीं? आश्चर्य! रोटी हवा में टंगी रही। शायद आजकल सुपर लाइट रोटियां वनने लगी हैं।
?
उपसंहार—
दूसरों को मूर्ख वनाने वाला प्रायः स्वयं मूर्ख वन जाता है।

# पापों से मुक्ति

किसी नगर में एक व्यापारी रहता था। उसका व्यापार दूर-दूर तक फैला हुआ था। वह अब बूढ़ा हो गया था। उसका केवल एक ही लड़का था, जिसका नाम रूपचन्द्र था। रूपचन्द्र, सचमुच ही बहुत रूपवान था। यहाँ तक कि स्वर्गलोक के सुन्दर से सुन्दर देवता उसे देख-देखकर जलते थे और उससे द्वेष करते थे।

व्यापारी का भवन एक सुन्दर बगीचे में था। उसके पास ही एक मालिन का घर था। मालिन व्यापारी के घर सवेरे और शाम के समय रंग-बिरंगे खिले हुए ताजे और सुन्दर फूल पहुंचाया करती थी। बाहर से और कोई आता-जाता नहीं था।

एक दिन व्यापारी का पुत्र रात को पलंग पर सो रहा था कि उसने स्वप्न में देखा कि उसके सिरहाने सोने के रंग की एक अत्यन्त सुन्दर राजकुमारी खड़ी हुई है। जब उसकी नींद टूट गई, तब भी उस राजकुमारी का रूप उसके मन में बसा रहा। अब वह दौड़कर अपने घर से निकला। यह देख उससे मालिन ने पूछा :

'सेठ के लड़के ! आज इतने सवेरे कहां जा रहे हो ?'

व्यापारी के बेटे ने उसे स्वप्न की बात बता दी। इस पर मालिन बोली—

'मेरी बात पर विश्वास करो, तुमने जैसी सुन्दर लड़की स्वप्न में देखी है, मैं उससे भी अधिक सुन्दर दिखा सकती हूं। उसके बादल के रंग के तो बाल होंगे और सोने रंग के हाथ, परन्तु यह प्रतिज्ञा करो कि विवाह करोगे, तभी उसे दिखाऊंगी, नहीं तो नहीं।"

इस पर सेठ के लड़के ने विवाह करने की प्रतिज्ञा की।

तब मालिन ने अपनी बहिन की सुन्दर लड़की को सरोवर के किनारे ले जाकर दूर से एक क्षण के लिए पीछे की तरफ से दिखा दिया। व्यापारी सेठ के लड़के को गश आ गया। जब उसे होश आया तो उससे मालिन ने कहा—

'सेठ के बेटे, मैंने अपना वादा तो पूरा कर दिया। अब तुम भी, अपना वादा पूरा करो। अपने पिता से जाकर कहो कि कांचन यानि सोने के रंग की कांचनमाला के अतिरिक्त और किसी से विवाह नहीं करूंगा।'

सेठ का बेटा बोला—

'मैंने लड़की के बाल और हाथ तो देख लिए, अब मुझे उसका चेहरा भी दिखला दो !'

मालिन ने कहा—

'लड़की का मुख तो मैं तभी दिखाऊंगी, जब तुम्हारे व्यापारी पिता की तरफ से बात पक्की हो जाए। इसके पहले नहीं।'

अब व्यापारी सेठ के बेटे रूपचन्द्र ने जाकर पिता से अपनी बात कही, इस पर वहाँ हाहाकार मच गया। रूपचन्द्र ने अपने कमरे का दरवाजा बन्द कर लिया। व्यापारी बिचारा अब क्या करता। लाचार हो गया। बुढ़ापे में अपने इकलौते बेटे के लिए वह सब कुछ कर सकता था। उसने सब देशों में कांचनवर्ण कांचनमाला के लिए नारियल भेजा। परन्तु कहीं भी इस नाम की कन्या का पता नहीं मिला। एक-एक दिन बीत रहा था और व्यापारी के सिर के सौ बाल पकते थे पर कुछ हुआ नहीं। उधर मालिन सौ-सौ फेरे करती थी कि उसे यह सुनने को मिल जाय कि सब देशों से नारियल लौट आए तब जाकर वह अपनी बात कहे।

मालिन की लड़की का भी खाना-पीना छूटा हुआ था। वह भी रूपचन्द्र का नाम जपती रहती थी। मालिन उसे समझाती कि बेटी अब काम बनने में देर नहीं है, परन्तु वह नहीं मानती।

इसी सिलसिले में संयोग से सात समुद्र और तेरह नदियों के उस पार एक राज्य की राजकन्या को स्वप्न हुआ कि रूपचन्द्र उसका पति है। इस पर राजकन्या के पिता ने सिपाही, प्यादे, माला, चन्दन आदि लेकर रूपचन्द्र को तलाशने के लिए भेज दिये। संयोग से राजा के सिपाही और सेठ के दूतों में एक जगह भेंट हो गई। फिर क्या था, व्यापारी की खबर राजा को और राजा की खबर व्यापारी को दी गई।

उस समय जब मालिन को यह खबर मिली, तो उसके पैरों के नीचे से जमीन खिसक गई। वह तुरन्त रूपचन्द्र के पास पहुंची और उससे पूछा—

'रूपचन्द्र, क्या तुमने राजकुमारी का चित्र देखा है ?'

रूपचन्द्र ने सच्चाई के साथ उत्तर दिया—

'नहीं, मैंने देखा नहीं है पर उसकी सुन्दरता के बारे में सुना है।'

मालिन ने अपनी बात पर जोर देते



हुए कहा—

'क्या तुम नहीं जानते कि सुनी हुई बातें बिल्कुल गलत होती हैं। यह सब व्यापारी की चालाकी है। तुम्हें कांचनवर्ण कांचनमाला मेरे सिवाय और कोई दे ही नहीं सकता। यह विश्वास रखना।'

रूपचन्द्र के सामने समस्या खड़ी हो गई, उसने पूछा—

'बताओ, फिर मैं क्या करूँ ?'

मालिन ने उत्साह और आशा से उत्तर दिया—

'तुम अपने पिता के पास से राजकुमारी का चित्र लाकर मुझे दिखाओ, फिर मैं तुम्हें बताऊंगी।'

रूपचन्द्र ने अपने पिता के कमरे से रात के अंतिम पहर में उस चित्र को चुरा लिया, पर उसे इतनी नींद लगी थी कि वह राजकुमारी के चित्र को देख नहीं सका और आकर अपने बिस्तर पर सो गया।

दूसरे दिन सवेरा होने के पहले मालिन ने रूपचन्द्र के कमरे में आकर उस चित्र को चुरा लिया। फिर उसने उस चित्र को बड़े बुरे ढंग से बिगाड़कर रख दिया। फिर वह उस चित्र को ले जाकर रूपचन्द्र के बिस्तर पर यथास्थान रख आई।

कुछ देर बाद रूपचन्द्र उठा और उसने राजकुमारी का चित्र देखा, जो एक बदसूरत स्त्री का चित्र था। उसे देखकर रूपचन्द्र घबरा गया। इसी समय मालिन भी वहां पहुंच गई। रूपचन्द्र ने उसे वह चित्र दिखाया। देखते ही मालिन ने मुंह बनाकर कहा—

'वाह, क्या कहना; यही है तुम्हारी कांचनमाला ? भला, कहाँ मेरी लड़की और कहाँ यह चुड़ैल। खैर, जब शादी हो रही है तो मजबूरी ही है तुम्हारी। परन्तु आंखों पर सात पट्टियाँ बांधकर शादी करना; क्योंकि चित्र देखने से साफ मालूम हो रहा है कि यह डायन है।'

शुभ मुहूर्त में रूपचन्द्र की राजकुमारी के साथ बड़ी धूमधाम से शादी हुई, परन्तु उस समय रूपचन्द्र ने अपनी आंखों पर सात पट्टियाँ बांध लीं और उन्हें अन्त तक नहीं खोला। रूपचन्द्र ने राजकुमारी से न तो कोई बात की और न कभी उसकी तरफ आंख उठाकर देखा। यह सब देखकर मालिन बहुत प्रसन्न थी। इतने में उसी वर्ष रूपचन्द्र के व्यापारी पिता का भी देहान्त हो गया। बस, इसके बाद मालिन ने रूपचन्द्र से कहा कि 'मैंने तो तुमसे पहले ही कहा था कि यह राजकुमारी डायन है, अब तो देख लिया। यही तुम्हारे पिता के लिए अशुभ साबित हुई और उन्हें खा गई।'

मालिन की बात सुनकर रूपचन्द्र डर गया। यहाँ तक कि उसने राजकुमारी को घर से निकाल दिया और अलग झोंपड़ी बनाकर उसमें रख दिया। उस बिचारी को कभी रूखा-सूखा बचा-खुचा भेज दिया जाता, तो कभी वह भी नहीं दिया जाता। वहाँ उसकी सुधबुध लेने न तो कोई जाता था और न कोई आता था।

अचानक एक दिन ढिंढोरा पीटा गया कि आज रूपचन्द्र सेठ अपनी आंखें खोलेंगे और मालिन की बहिन की लड़की से उनकी शादी होगी। उस दिन खुशी में फूली मालिन का तो यह हाल था कि उसके जमीन पर पैर ही नहीं पड़ते थे। बहुत दिनों के प्रयत्नों के बाद आज उसे उसका फल मिलने वाला था। पर शहर के सब लोग उसके विरुद्ध हो गए थे।

जब मालिन को यह मालूम हुआ तो वह बहुत परेशान हुई।

रूपचन्द्र के नौकर जब विवाह-संस्कार करवाने के लिए पुरोहितों के यहाँ गए तो उन्होंने मना कर दिया। अधिक से अधिक दक्षिणा के लोभ से भी वे नहीं पसीजे। नाइयों का भी यही हाल था। बनियों ने सामान नहीं दिया। फिर भला, विवाह कैसे होता ? अन्त में विवाह होना टल गया।

एक दिन रूपचन्द्र की माँ ने देखा कि घर का सप्तदलमणि जा चुका है। वह अपने बेटे से बोली—'बेटे, तुम व्यापार करने नहीं गए, इस कारण घर का विनाश हो रहा है।'

मां की बात सुन रूपचन्द्र को होश आया और वह उसी दिन यात्रा के लिए तैयार हो गया। उधर राजकुमारी कांचनमाला को अपनी झोंपड़ी में इसका पता लगा तो वह दौड़ी हुई आई। पति के पैरों को पकड़ कर कातर स्वर में बोली—

'न जाने बाहर कितने दिनों के लिए जा रहे हो, एक बार सीधे से बोल तो दो। मैं तुम्हारी नजर में अपराधिनी तो हूं ही।'

रूपचंद्र ने जैसे ही कांचनमाला को देखा तो उसने तुरन्त आंखें बंद कर लीं और बोला—

'मैंने सुना है कि तू राक्षसी है। जा, मेरे सामने से चली जा ! मैं आज ही घर से जा रहा हूं, तू मुझे न खा।'

कांचनमाला ने जब अपने पति की यह हालत देखी तो वह तुरन्त वहां से चली गई। यह देखकर मालिन बहुत खुश हुई। वह जाकर अपनी बहिन की लड़की से बोली—'अब तू तैयार हो जा और तुरन्त धान और दूब लेकर मेरे साथ चल।'

बहिन की लड़की कुछ सोचने लगी। इस पर मालिन ने मंत्र पढ़कर रात को रोक दिया। फलस्वरूप कौए और चीलें सात-सात बार जगीं और सात बार सोईं, फिर भी सवेरा नहीं हुआ। उधर राजकुमारी कांचनमाला ने देखा कि उसकी बत्ती बुझ गई है, फिर भी सवेरा नहीं हुआ। सारे प्राणी भूखों मरने लगे, पर सवेरा नहीं हो रहा था।

परन्तु जब राजकुमारी झोंपड़ी से बाहर निकली, तो एकदम से जादू कट गया और दिन निकल आया।

रूपचन्द्र व्यापार के काम से विदेश जाने के लिए जहाज में बैठ चुका था। उसने अब मल्लाहों से कहा—

'तुरन्त चल दो ! बहुत देर हो चुकी है।'

आज्ञा मिलते ही मल्लाहों ने जहाज को रवाना करना चाहा, पर वह चला ही नहीं। तब मल्लाहों ने रूपचन्द्र से पूछा—'इष्टदेव की पूजा कर ली न ?'

'हाँ, कर ली।' रूपचन्द्र ने झिझककर कहा।

'भोग आदि चढ़ा दिया न ?' मल्लाहों ने पूछा।

'हां, वह भी चढ़ा दिया।' रूपचन्द्र का उत्तर था।

मल्लाहों ने कहा कि फिर तो जहाज को चलना चाहिए। फिर सब मल्लाहों ने जोर लगाया, तो डांड टूट गया, मस्तूल फट गया। जहाज एक इंच भी आगे नहीं बढ़ा। गुस्से में जहाज के कर्णधार ने कहा—

'सेठ, मालूम होता है कि तुमने देवी-देवताओं को तुष्ट नहीं किया है।'

रूपचन्द्र ने हैरानी से उत्तर दिया—

'मैंने अपने कुल की रीति के अनुसार सभी धार्मिक कार्य किये हैं।'

'अच्छा तो तुमने अपनी पत्नी से विदा ली है ?' मल्लाहों ने पूछा।

रूपचन्द्र ने कहा—

'मैंने ऐसा तो नहीं किया।'

तब जहाज का कर्णधार बोला—

'जाओ, और उससे तुरन्त विदाई लो !'

अब रूपचन्द्र कर ही क्या सकता था। वह उसी झोंपड़ी में पहुंचा और दूर से ही विदाई माँगने लगा। इस पर कांचनमाला बोली—'मुझे भी साथ ले चलो।'

इससे रूपचंद्र डर गया और लौटकर कर्णधार से बोला कि जहाज खोल दो, परन्तु कर्णधार ने कहा कि विदाई तो नहीं मिली। इसलिए नहीं हिलेगा।

रूपचंद्र फिर कांचनमाला के पास पहुंचा और बोला—

'तुम्हारे लिए मैं गज-मुक्ताओं की माला ले आऊंगा, तुम विदाई दे दो!'

इस पर कांचनमाला बोली—'तुम्हीं मेरी गज-मुक्ताओं की माला हो। तुम्हीं मेरे सब कुछ हो। मैं घर-घर तुम्हारी चीजें बेचूंगी।'

अब रूपचंद्र ने कर्णधार से सलाह ली। वह बोला—

'इन्हें साथ लो, नहीं तो जहाज नहीं चलेगा।'

अब रूपचंद्र क्या करता? उसने तीन सौ साठ वर्ष पुरानी एक नाव में कांचन को बिठा दिया, और अपना जहाज छोड़ दिया। जहाज तो तीर की भांति चला, परन्तु कांचन की नाव बहुत धीरे-धीरे चलने लगी। मालिन भी किनारे-किनारे दौड़ी। उसने जाकर किनारे की बस्तियों के लोगों को भड़का दिया। इससे न तो व्यापारी का जहाज कहीं किनारे से लग सका और न कांचन की नाव ही कहीं लग पाई। जब मालिन ने देखा कि इससे भी काम नहीं बन रहा तो उसने रूपचंद्र और कांचन—दोनों के सत्यानाश का मंत्र पढ़ा। इसका नतीजा यह हुआ कि कांचन तो सती होने के कारण बच गई, परन्तु रूपचंद्र का जहाज टूट-फूट गया। कांचन ने तुरन्त पहुंच कर उसे और उसके मल्लाहों को बचाया, परन्तु रूपचंद्र यही सोचता रहा कि मालिन ने उसे बचाया। जहाज की मरम्मत की गई और फिर जहाज तथा नाव रवाना हुई।

जहाज आगे एक ऐसी जगह पहुंचा, जहां के लोग नरबलि के लिए उतारू थे। इस मौके पर उन्हें जैसे आदमी की बलि के लिए जरूरत थी, वे सब लक्षण रूपचंद्र में दिखाई दिये। बस, फिर क्या था, उन जंगली लोगों ने अपने देवता की पूजा करते समय रूपचंद्र का बलिदान कर दिया। पीछे से कांचन अपनी नाव पर पहुंची तो उसने यह हाल देखा। मल्लाह पहले ही जा चुके थे, कांचन की नाव भी डूब गई। उसने नदी के किनारे बैठकर कटे हुए रूपचंद्र के सिर को उसके शरीर से जोड़ दिया।

इस प्रकार कांचन के सतीत्व के तेज से रूपचंद्र जीवित हो गया। जीवित होते ही उसने पूछा—

'कौन है? मालिन की बहिन की लड़की? मैं परदेश में व्यापार करने के लिए जा रहा हूं। तुम मेरे साथ क्यों चल रही हो? अब तुम लौट जाओ।'

कांचन ने फिर भी कुछ नहीं कहा। उसने रूपचंद्र के जहाज को ठीक करवाया। सारा माल बटोरवा लिया और फिर पहले की तरह आगे-आगे जहाज और पीछे-पीछे टूटी नाव चलने लगी। चारों तरफ अकाल पड़ा हुआ था, इसलिए पर्याप्त धन होते हुए भी खाने को कुछ नहीं मिलता था। रूपचंद्र बोला—

'यदि मालिन मौसी होती, तो मेरा दुःख न देख सकती।'

कांचनमाला ने यह सुन लिया और वह किनारे की बस्तियों से भीख मांगकर अन्न लाने लगी। उसके माथे पर सिन्दूर देखकर लोग तरस खाते थे। न कहीं बर्तन थे न और कुछ, इसलिए वह हथेली पर ही खाना पकाती थी। रूपचंद्र ने देखा कि बढ़िया अन्न और सात तरह की तरकारियां तथा आठ तरह के पकवान कमल के पत्ते पर तैरते हुए पहुंच जाते हैं। सती के स्पर्श से भीख के टूटे चावलों के इतने रूप हो जाते थे। रूपचंद्र ने कहा—

'मालिन मौसी ने ही इन सारी चीजों को भेजा है। एक बार जीते-जी वापस लौटूं, तो मालिन मौसी का दर्शन करूंगा।'

परन्तु सचमुच मालिन जादू से वहां पहुंच गई। उसने चील का रूप रखकर कांचनमाला को, उसके बाल पकड़ कर नाव से खींच लिया फिर नदी में उसे डूबो दिया। मालिन अब बेफिक्री के साथ बोली—

'सेठ के बेटे, अब तुम्हारी विपत्ति टल गई। अब मैंने चुड़ैल को नदी में डूबो दिया है।'

जब रूपचंद्र ने यह सुना तो वह बहुत दिनों के बाद अच्छी तरह आँख खोलकर, निर्भयता से ताकने लगा। उसने देखा कि कमल के पत्ते तैरते हुए आ रहे हैं। हाथ बढ़ाकर रूपचंद्र ने एक पत्ता उठा लिया और उसे देखने लगा तो उसमें जैसे किसी का चित्र खिंचा हुआ था। उसे वह ध्यान से देखने लगा।

रूपचन्द्र अभी कमल-पत्र पर बने चित्र को देख ही रहा था कि मालिन समझ गई कि अरे, कांचनमाला तो जीवित है, मरी नहीं। यह जानकर वह अपने बाल नोचने लगी। उसी समय देवताओं ने कांचनमाला को रथ पर रखकर उसकी एक झलक रूपचन्द्र को दिखा दी। रूपचन्द्र उसे देखकर एकदम बेहोश होकर गिर पड़ा और जब वह होश में आया तो उसने देखा कि वह सौ वर्ष का बूढ़ा हो गया है। उसके बाल पक और उड़ गए हैं तथा शरीर गल गया है। अब इस हालत में रूपचन्द्र क्या करता, घर वापस लौट गया।

रूपचन्द्र घर आ गया। उसने अनेक धार्मिक अनुष्ठान किए। यज्ञ और तपस्या करने पर भी कुछ नहीं हुआ। ऋषियों ने कहा—

'रूपचन्द्र, जिसे तुम इस संसार में सबसे अधिक प्यारे हो, वह यदि सात पहर उपवास रखकर तुम्हारे गले हुए अंगों को चूमे, तो तुम अच्छे हो सकते हो। परन्तु यह भी सुन रखो कि जो ऐसा करेगा, उसके बगल में सात कोस तक पानी हो जायगा और वह उस पानी के किनारे एक ताड़ का पेड़ होकर रह जाएगी।'

रूपचन्द्र ने इस समस्या को अपनी माँ के सामने रखा और उससे कहा कि तुम बूढ़ी हो गई हो। इसलिए तुम्हीं मेरे पहले की हालत में लौटने के लिए ताड़ का पेड़ बन जाओ।

'माँ ने साफ-साफ जवाब दिया—

'बेटा, मेरा चौथेपन का समय है। दान-पुण्य करूंगी। मुझे ताड़ का पेड़ नहीं बनना है।'

तब रूपचन्द्र मालिन के पास गया और उससे कहा—

'मौसी, ऐसी-ऐसी बात है, तुम्हीं मेरे लिए ताड़ का पेड़ बन जाओ!'

मालिन घृणा के साथ थू-थू करके पीछे हट गई। परन्तु मालिन की बहिन की लड़की इस बात को तैयार हो गई। वह बोली कि ताड़ का पेड़ ही सही, रूपचन्द्र का रूप ही पेड़ के रूप में देख सकूंगी।

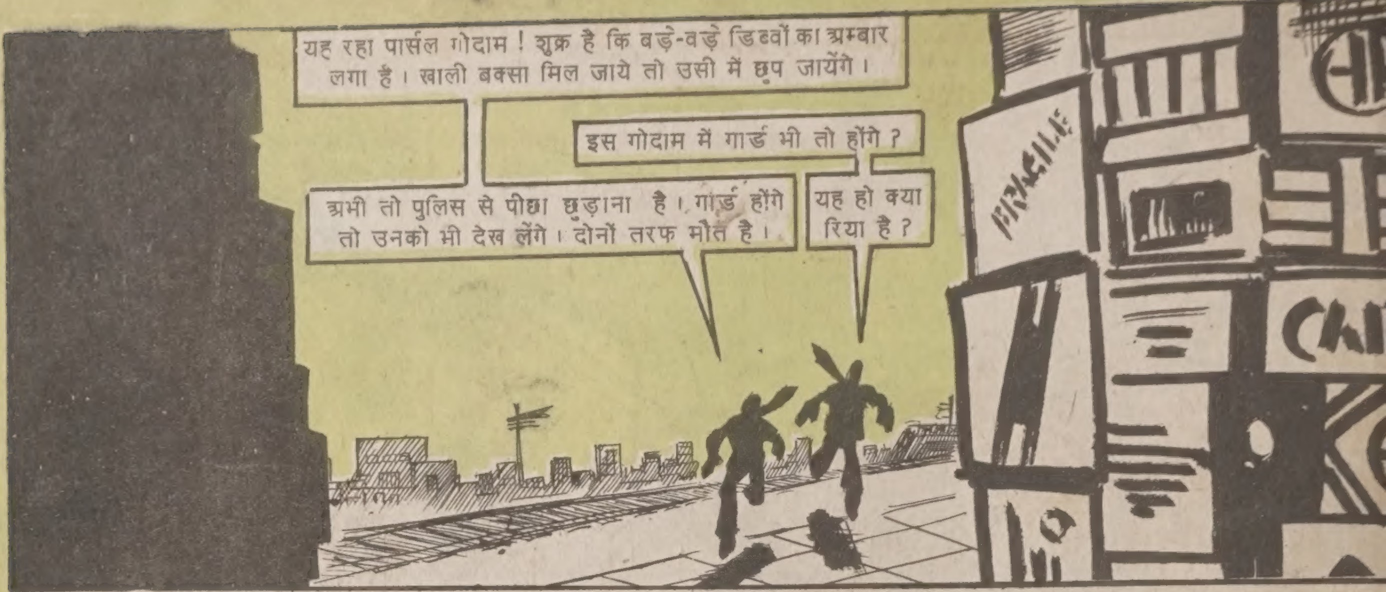
फलस्वरूप मालिन की बहिन की लड़की ने जैसा कहा वैसा करके भी दिखाया। नतीजा यह हुआ कि वह तो ताड़ का पेड़ बन गई और रूपचन्द्र फिर पहले की उम्र में ही और भी अधिक रूपवान बन गया।

उस दिन से रूपचन्द्र सेठ कोई काम-

(शेष पृष्ठ ३४ पर)



पिछले अंक में आपने पढ़ा कि गुप्तचर विभाग पिलपिल-सिलबिल की एक बहाने से प्लास्टिक सर्जरी से शक्लें बदल देता है। बाद में दोनों को पता लगता है कि उनके साथ धोखा हुआ है। उनकी शक्लें वास्तव में हू-बहू रमण व राघव की बना दी गयी थीं जिन पर ४२ लोगों के कत्ल का इलजाम था। पब्लिक व पुलिस उन दोनों के पीछे पड़ जाती है। इस समय वे पुल पर से कूद कर रेल लाइन पर गिरे हैं।
ओर से दनदनाती हुयी राजधानी एक्सप्रेस आती है। पिल-सिलबिल उर्फ कर्मचन्द व धर्मचन्द बाल-बाल बचते गाड़ी के पहिये उनके कपड़ों को छूते-छूते निकल जाते हैं। दोनों सुख की सांस लेते हैं।
ई जी, फेफड़े फटने को हैं। थोड़ी देर आराम कर लें?
आंखें फूटी हैं? वह देख पुलिस पुल से नीचे उतर रही है।
यीं तरफ उधर रेलवे माल गोदाम है। उसी की ओर दौड़ ा। वहां पार्सल के डिब्बों के पीछे छिपने को शायद जगह ल जायेगी, मौका मिल जाये तो वहीं थोड़ी देर सुस्ता लेंगे।
वह चूहा गरीब चन्द कहां रह गया?
दौड़ में खप गया गा!


यह रहा पार्सल गोदाम ! शुक्र है कि बड़े-बड़े डिब्बों का अम्बार लगा है। खाली बक्सा मिल जाये तो उसी में छुप जायेंगे।
इस गोदाम में गार्ड भी तो होंगे ?
अभी तो पुलिस से पीछा छुड़ाना है। गार्ड होंगे तो उनको भी देख लेंगे। दोनों तरफ मौत है।
यह हो क्या रिया है ?


हमारी शक्लें कनपटी मार कातिलों की बना कर पता नहीं कौन-सा षड्यंत्र रचा गया है ?
पकड़े गये तो बचने की कोई सूरत नहीं होगी। अदालत हमें सीधे फांसी की सजा दे देगी।


उधर पुलिस भी चुपचाप नहीं बैठी थी। पूरी पुलिस फोर्स फ्लाइंग स्कवाड की कारों में-पुलिस के कुत्तों की सहायता से माल गोदाम की तरफ बढ़ रही है जिसमें, पिलपिल-सिलबिल छिपे हैं। कुत्तों के भौंकने की आवाज भयानक भयोत्पादक वातावरण पैदा कर रही है।
POLICE



रमण व राघव बाहर निकल आओ, तुम चारों ओर से घिर चुके हो। अब तुम्हारा खेल खत्म हो चुका है। अपने को पुलिस के हवाले करो।
वर्ना भून दिये जाओगे।
जान बचाने की आखिरी कोशिश में दोनों पुलिस सर्च लाइटों और गोलियों की बौछार में दौड़ते हुए पुल पर पहुंच जाते हैं।
पीछे से पुलिस कार आती देख कोई और चारा न पा कर पिलपिल व सिलबिल उर्फ कनपटी मार कातिल पुल के पोल पर ऊपर चढ़ना शुरू कर देते हैं।
यह हमारी आखिरी चेतावनी है नीचे उतरो।
दोनों चेतावनी अन-सुनी कर चढ़ना शुरू कर देते हैं।






मिलावट पिल्लीपल के नए कारनामे अगले अंक में

# आपके पत्र

दीवाना का फैशन अंक काफी दौड़-धूप के बाद मिला ! इस अंक में चिल्ली लीला, चाचा चौधरी, पिलपिल-सिलबिल, मोटू-पतलू, परोपकारी और फैशन की जड़ें विशेष अच्छी रही। महाचोर की फिल्म परोडी भी अच्छी रहीं। मुख पृष्ठ पर चिल्ली को औरत बने देखकर बहुत हँसी आई। क्या परोपकारी को अपना परोपकार दिखाने के लिए आप शेरघाटी में नहीं भेज सकते? कृपया फैंटम के स्थान पर कोई दूसरी चित्र कथा आरंभ कर दें। यंत्र मानव युग भी बहुत बोर करने लगा है। जब से मैंने दीवाना पढ़ना शुरू किया तब से दूसरी हास्य पत्रिकाएँ फीकी लगने लगी हैं। क्या मैं दीवाना में चुटकुले भेज सकता हूं ?

सुवाष कुमार शेरघाटी (गया)—बिहार

जी हां, अवश्य भेजिए। परन्तु चुटकुले नए होने चाहिएं। —सं०

मुझे दीवाना का ४८ अंक प्राप्त हुआ। मोटू-पतलू, पिलपिल-सिलबिल, परोपकारी, मदहोश आदि फीचर पसन्द आए और फिल्म बैराग की पैरोडी भी पसन्द आयी। मुझे आशा है इसी तरह दीवाना पत्रिका हमें दीवाना बनाती रहेगी। कृपया फैण्टम का कामिक ज्यादा पन्नों में दें।

**—उत्तम कुमार (शाही) नेपाल**

दीवाना का ९ दिसम्बर का अंक फैशन विशेषांक के रूप में मिला। सभी स्थाई स्तम्भों के अलावा नये-नये फैशन के कारनामे पढ़ने को मिले। फैशन की जड़ें, काका के कारतूस, फैशन की मार से कैसे बचें और क्यों करें फीचर कुछ अपनी ही तरह के फीचरों ने तो दीवाना के इस अंक को चार चांद ही लगा दिए। 'महाचोर' की पैरोडी बहुत अच्छी लगी।

**—संतोष सिंह मनोचा, अमृतसर**

दीवाना का अंक ५१ पैसेन्जर की तरह धीरे-धीरे प्राप्त हुआ। जब मुख पृष्ठ पर आइने में चिल्ली जी की नई फोटो देखी तो हम भी दीवाने हो गये। इसमें कहानी 'बाजी' बहुत अच्छी लगी, और सभी स्तम्भ बहुत अच्छे लगे। हमें दीवाना का (खेलकूद) अंक नहीं मिला।

**—पवन कुमार वोहरा, अमृतसर**

## फिसल जाऊंगा…।

बस में
काफी भीड़ थी
समस्या गंभीर थी।
एक दुबले-पतले सज्जन
बस में खिसकते-खिसकते
एक गंजे आदमी से
सट कर बैठ गए।
गंजा आदमी चिल्लाया
"हां-हां आ जाओ।
सिर पर चढ़ जाओ।"
दुबले-पतले सज्जन
गंजे सिर को देखते हुए
बोले—"मैं अगले स्टाप
पर उतर जाऊंगा।
यहीं ठीक हूं वहां से
फिसल जाऊंगा।"

**शिव कुमार सोनी 'सिब्बू'**

# रंग भरो प्रतियोगिता

यह प्रतियोगिता दो भागों में विभाजित है। पहला भाग ८ साल की आयु से १४ साल की आयु तक, और दूसरा भाग १५ साल की आयु से ऊपर के सभी पाठक।

आप भी जल्दी रंग भर कर भेजिये, अपनी आयु व पता सही-सही लिखें। यदि आप चाहें तो एक से अधिक चित्र में रंग भर कर भेज सकते हैं। हर कूपन में अपना नाम, पता व आयु लिखना न भूलें।

दोनों भागों में पहला, दूसरा व तीसरा इनाम दिया जाता है।

अंतिम तिथि १६ जनवरी

नाम

पता

आयु



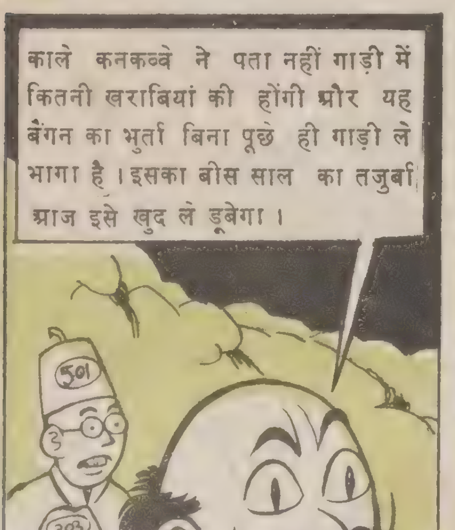
# मोटू पतलू के रास्ते में मुसीबत

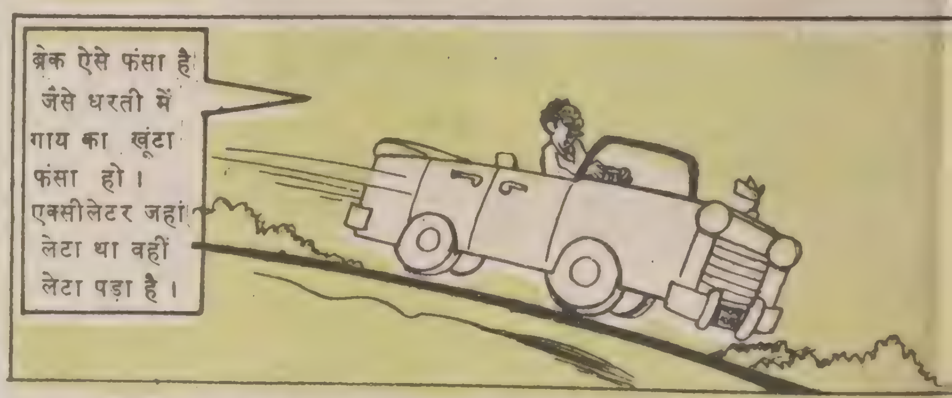
मोटू-पतलू और चेलाराम अब गुप्तचर विभाग के माने हुए, जासूस हैं और घसीटाराम जी जबरदस्ती के जासूस बनकर दूसरों के फटे में पांव फंसा रहे हैं। पिछले दिनों सूचना मिली कि मिस्र में हमारा मित्र शेख उसमान नाम का तेल का बादशाह मुसीबत में है। और डी० डी० नाम का एक विदेशी गैंग उनकी मिडिल ईस्ट आयल कम्पनी हड़पना चाहता है। मोटू-पतलू और चेलाराम शेख उसमान की सहायता के लिए मिस्र जाने लगे तो काला कनकव्वा नाम के एक डी० डी० (Death devil) एजेंट ने भारत में ही उनके लिए नई-नई मुसीबतें खड़ी कर दीं, मोटू-पतलू बम्बई तक की यात्रा कार द्वारा करना चाहते थे। काल कनकव्वे ने उनके ब्रेक फेल कर दिए। यह गाड़ी घसीटाराम जी ले भागे। इसके बाद घसीटा राम जी की जो हालत हो रही है उसका कानों सुना हाल आँखों देखिए और तालियां बजा-बजाकर अपने खुशी के आंसू पोंछते रहिए।







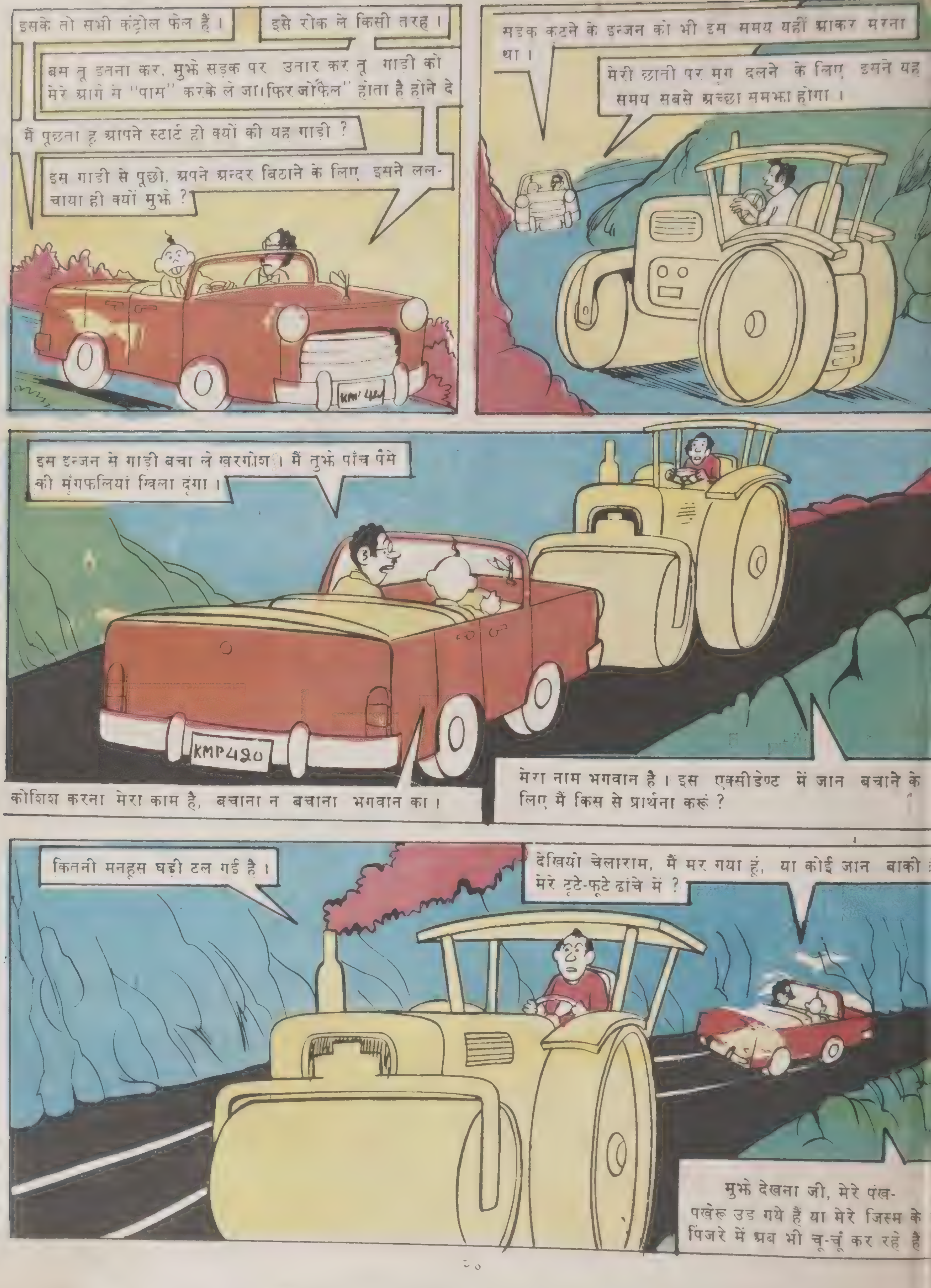




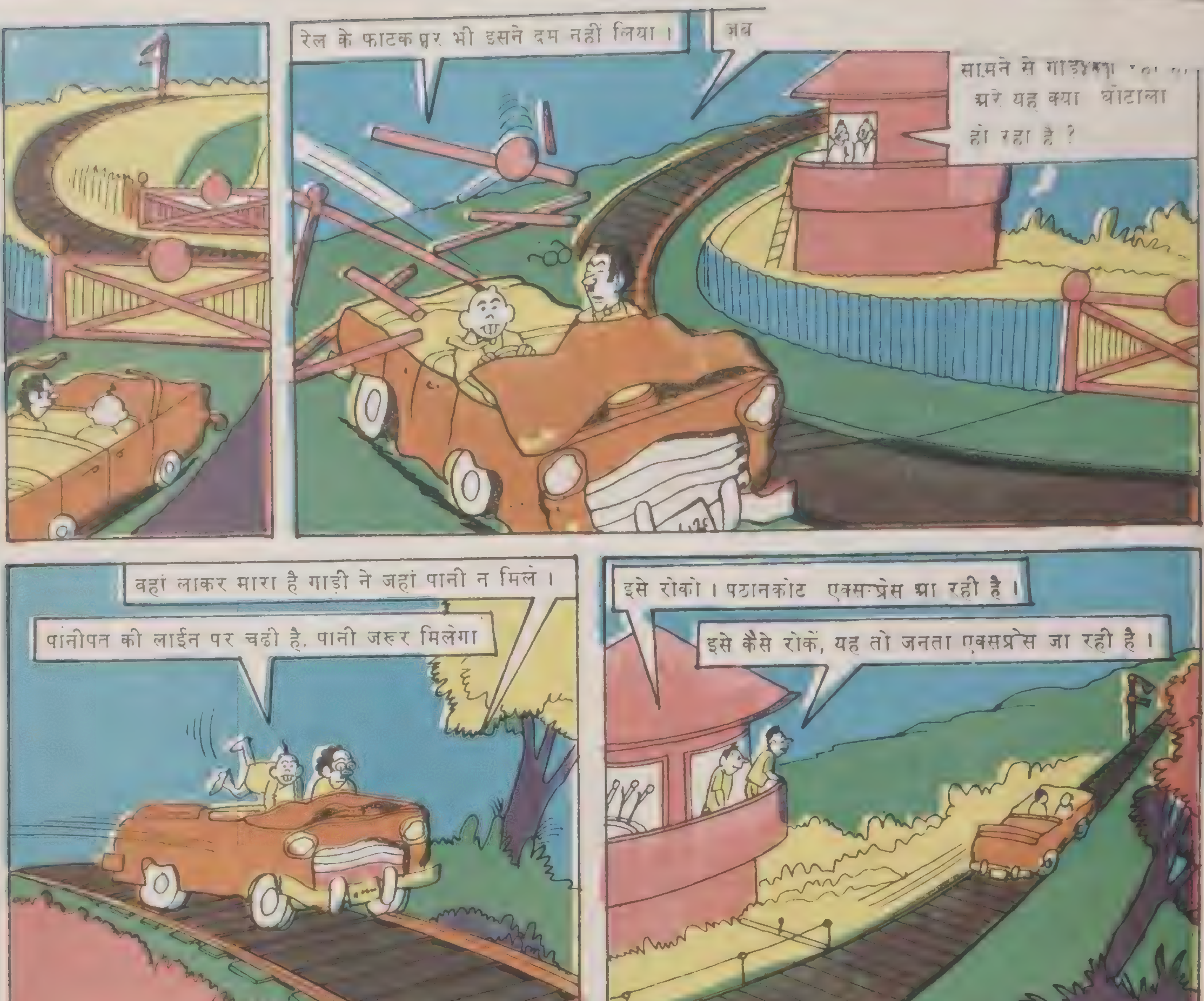


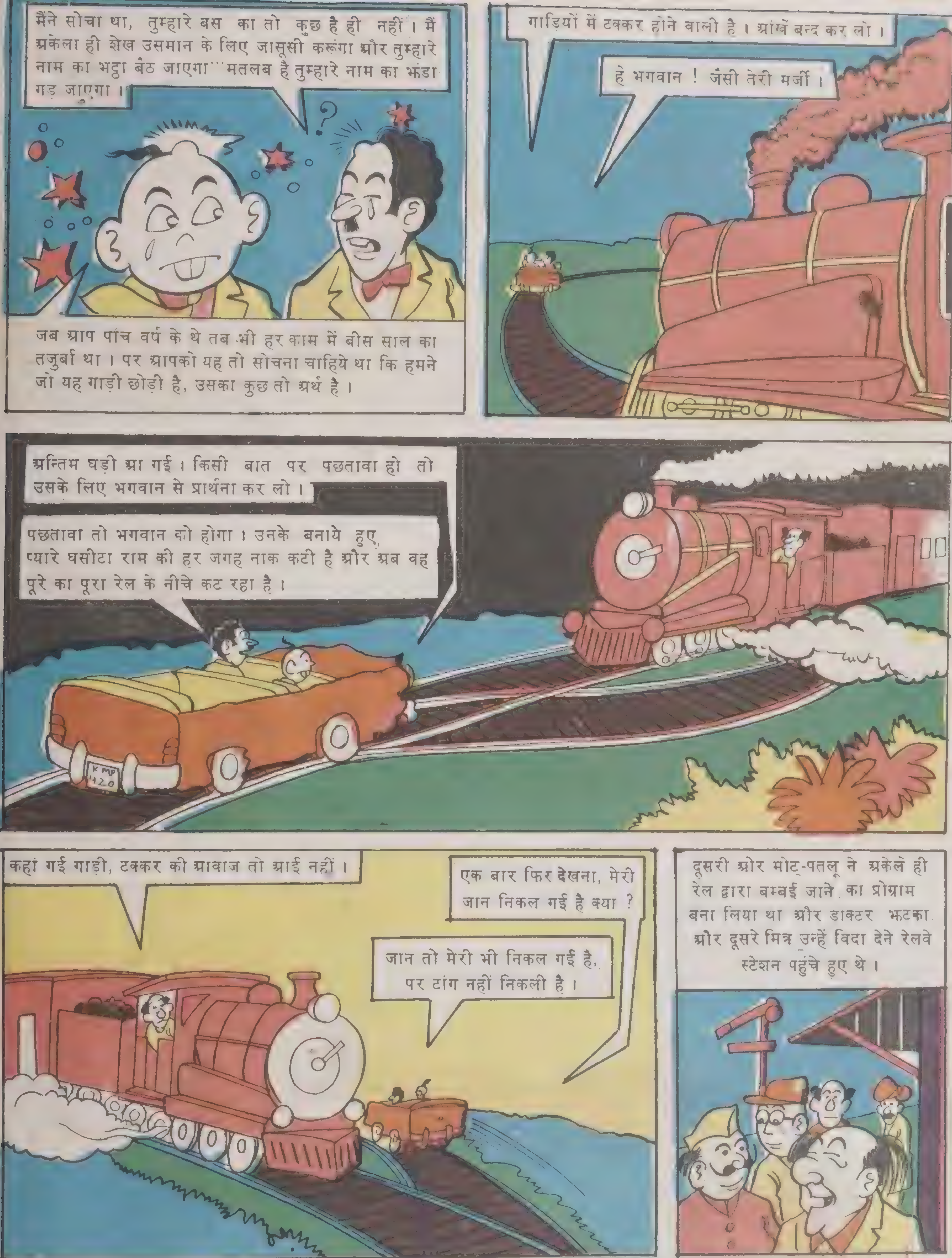
गाड़ी काबू से बाहर है । काले कनकव्वे ने इसके सब कंट्रोल खराब कर दिये हैं । पहाड़ी ढलान पर यह गाड़ी कहीं नहीं रुकेगी और घसीटाराम जी को लेकर किसी गहरी खाई में जा पड़ेगी । मुझे इनकी जान बचानी चाहिए ।
303
रुक जा मोतियों वाली । रुक जा ग्रास ग्रौलाद वाली । मैं हेमा मालिनी के साथ तेरी फोटो दीवाना में छपवा दूँगा। अरे एक बार तो रुक जा ठंडा पानी पीने के लिए ।
मुझे गुस्सा आ गया तो मुझसे बुरा कोई न होगा, मैं बताए देता हूं । मैं तेरा गला घोटकर अपनी आत्महत्या कर लूगा ···मतलब है तेरी हत्या कर दूंगा ।
यह शार्टकट ठीक रहेगा गाड़ी पकड़ने के लिए ।
ब्रेक तो फंसा ही था, अब मेरी टांग कहाँ फंस गई···?
•अरे मेरी टांग···अरे मेरी टांग···!
तुम्हारी टांग के पकौड़े तलकर खा गई क्या यह गाड़ी ?
मार लिया मोर्चा, बन गया काम ।
मर गया घसीटाराम । चुटिया पकड़ कर खींच ले इस गाड़ी को ।



इसके तो सभी कंट्रोल फेल हैं ।
इसे रोक ले किसी तरह ।
बस तू इतना कर, मुझे सड़क पर उतार कर तू गाड़ी को मेरे आगे से "पास" करके ले जा।फिर जो"फेल" होता है होने दे
मैं पूछता हूं आपने स्टार्ट ही क्यों की यह गाड़ी ?
इस गाड़ी से पूछो, अपने अन्दर बिठाने के लिए इसने लल-चाया ही क्यों मुझे ?
सड़क कटने के इन्जन को भी इस समय यहीं आकर मरना था ।
मेरी छाती पर मूंग दलने के लिए इसने यह समय सबसे अच्छा समझा होगा ।
इस इन्जन से गाड़ी बचा ले खरगोश । मैं तुझे पांच पैसे की मूंगफलियां खिला दूंगा ।
KMP420
कोशिश करना मेरा काम है, बचाना न बचाना भगवान का ।
मेरा नाम भगवान है । इस एक्सीडेण्ट में जान बचाने के लिए मैं किस से प्रार्थना करूं ?
कितनी मनहूस घड़ी टल गई है ।
देखियो चेलाराम, मैं मर गया हूं, या कोई जान बाकी है मेरे टूटे-फूटे ढांचे में ?
मुझे देखना जी, मेरे पंख-पखेरू उड़ गये हैं या मेरे जिस्म के पिंजरे में अब भी चूं-चूं कर रहे हैं


पहाड़ से उतर कर गाड़ी ग्रब मैदानी खेतों में ग्रा गई थी ।
यहां फंसी जान कैसे निकलेगी ?
यहां फंसी मेरी टांग कैसे निकलेगी ।
गाड़ी कुँए में डूबने से बच गई ।
पर इसे जरा भी शर्म होती तो यह चुल्लू भर पानी में न डूब मरती ।
पता नही इसका तेल कब समाप्त होगा
ग्रभी तो यह कह रही है, ग्रपना तेल निकलवाग्रो ग्रौर तेल देखो, ग्रौर तेल की धार देखो ।
किसी फौजी की ग्रात्मा तो नहीं घुसी हुई है इस गाड़ी में। जो यह कांटेदार तारों की भी परवाह नहीं कर रही है ।
बम तो लड़ाई के मैदान जैसे ही छोड़ रही है ।
टायरपंचर होने के बाद ग्रब पहियों से बाहर हो रहे थे ।
पता नहीं यह गाड़ी कितने हार्स पावर की है ।
"बैल पावर" कहो ग्रब तो बैल गाड़ी बन गई है यह ।


रेल के फाटक पर भी इसने दम नहीं लिया।
अब
सामने से गाड़ी
अरे यह क्या घोटाला हो रहा है ?
वहां लाकर मारा है गाड़ी ने जहां पानी न मिले।
पानीपत की लाईन पर चढी है. पानी जरूर मिलेगा
इसे रोको। पठानकोट एक्सप्रेस आ रही है।
इसे कैसे रोकें, यह तो जनता एक्सप्रेस जा रही है।
यह तुम इस रेल के इंजन को कहां ले आए हो ड्राईवर भाई।
पहले यह बताओ तुमने इस रेल गाड़ी को हरी झंडी क्यों दिखाई थी गार्ड बाबू ?
KMP 420



मैंने सोचा था, तुम्हारे बस का तो कुछ है ही नहीं। मैं अकेला ही शेख उसमान के लिए जासूसी करूंगा और तुम्हारे नाम का भट्ठा बैठ जाएगा...मतलब है तुम्हारे नाम का झंडा गड़ जाएगा।
जब आप पांच वर्ष के थे तब भी हर काम में बीस साल का तजुर्बा था। पर आपको यह तो सोचना चाहिये था कि हमने जो यह गाड़ी छोड़ी है, उसका कुछ तो अर्थ है।
गाड़ियों में टक्कर होने वाली है। आंखें बन्द कर लो।
हे भगवान! जैसी तेरी मर्जी।
अन्तिम घड़ी आ गई। किसी बात पर पछतावा हो तो उसके लिए भगवान से प्रार्थना कर लो।
पछतावा तो भगवान को होगा। उनके बनाये हुए प्यारे घसीटा राम की हर जगह नाक कटी है और अब वह पूरे का पूरा रेल के नीचे कट रहा है।
KMP 420
कहां गई गाड़ी, टक्कर की आवाज तो आई नहीं।
एक बार फिर देखना, मेरी जान निकल गई है क्या?
जान तो मेरी भी निकल गई है, पर टांग नहीं निकली है।
दूसरी ओर मोटू-पतलू ने अकेले ही रेल द्वारा बम्बई जाने का प्रोग्राम बना लिया था और डाक्टर झटका और दूसरे मित्र उन्हें विदा देने रेलवे स्टेशन पहुंचे हुए थे।


घसीटा राम की गाड़ी को बचाते-बचाते चेलाराम भी पता नहीं कहां चला गया ।
वह पीछे किसी ग्रौर गाड़ी से ग्रा जाएगा । जासूसी के काम में सबका एक साथ जाना ठीक नहीं ।
हमारी महामूर्ख प्रतियोगिता में प्रथम ग्राने वाला स्पेशल ट्रेन से ग्रा रहा है ।
योजना के ग्रनुसार हम पूरे सम्मान से उसका जलूस निकालेंगे ।
हमारा नया अध्यक्ष अमर रहे
जलूस के लिए स्टेशन से बाहर सजी-सजाई सवारी तैयार है। वह ग्रा रही है स्पेशल ट्रेन ।
स्पेशल ट्रेन से कट कर ग्रकेली स्पेशल बोगी ग्रा रही है ।
DELHI
ग्रौर यह स्पेशल ट्रेन भी ऐसी पढ़ी-लिखी थी कि स्टेशन पर ग्राकर ग्रापसे ग्राप ही रुक गई ।
हमारा मेहमान ग्रमर रहे ।
हमारी प्रतियोगिता का विजयी ग्रमर रहे ।
हमारा बुद्धू मेहमान बुद्धिमान अमर रहे !



मैं कोई प्रतियोगिता जीत गया हूं ? मैं कोई रेल और मोटर की दौड़ जीत गया हूं ?
अरे तेरी किस्मत खुल गई मोतियों वाले घसीटा राम ।
मैंने आपका कितना साथ दिया है । मुझे याद रखना जी ।
बड़े आदमियों के चमचे कितनी जल्दी पैदा हो जाते हैं ।क्या साथ दिया है तूने ? मेरी फंसी टांग तो तुझसे निकाली नहीं गई । अब तेरे मुंह में अपना जूता देना याद रखूंगा मैं ।
बताओ जी, क्या सम्मान कर रहे हैं आप मेरा ?
चलिये सम्मान के लिए बाहर सवारी तैयार है ।
महामूर्ख मंडल जिन्दावाद !
हमारा नया अध्यक्ष अमर रहे ।
यह हमारा वही विजेता है न जो बम्बई से आने वाला था ।
D
तोता भी इननी जल्दी आंख नहीं फेरता जितनी जल्दी यह फेरते हैं । मैंने कुछ कहा, तो कहेंगे, तू तो मेरा प्यारा खरगोश है । अब मैं जहां बैठा हूं वहां भी मेरी टांग फंसी है । इसे निकाल दे ।
यह वह पराजित है, जो बम्बई जाने वाला था ।
हंसा-हंसाकर आंखों में आंसू ला देने वाली इस विचित्र-सचित्र कहानी का अगला भाग दीवाना के अगले अंक में पढ़ना न भूलिये, और याद रखिये आपके मोटू-पतलू आपके प्रिय दीवाना में ही प्रकाशित होते हैं ।


हँसें...
दीवाना
कैलेन्डर
जनवरी 1977
1 2 3 4 5
Sunday 2 9 16 23 30
Monday 3 10 17 24 31
Tuesday 4 11 18 25
Wednesday 5 12 19 26
Thursday 6 13 20 27
Friday 7 14 21 28
Saturday 1 8 15 22 29
हंसी लाने के लिये बारात
लेकर नहीं जाना पड़ेगा

# क्यों और कैसे

**प्र० : नोबेल पुरस्कार कब और कैसे आरम्भ हुआ ?**

उ० : कुछ ही दिन पहले आपने अखबारों में नोबेल पुरस्कार विजेताओं के नाम पढ़े होंगे। क्या आप जानते हैं कि यह पुरस्कार किस महापुरुष ने आरम्भ किया।

नोबेल पुरस्कार एलफ्रेड बर्नहर्ड नोबेल (१८३३-१८९७ ई) के नाम पर दिये जाते हैं।

नोबेल, स्वीडन के बड़े कैमिस्ट तथा आविष्कारक थे। डाइनामाइट (dynamite) की खोज तथा नोबेल पुरस्कार की स्थापना दोनों का श्रेय उन्हें ही प्राप्त है।

नोबेल के पिता नाइट्रोग्लीसरीन का उत्पादन करते थे। नाइट्रोग्लीसरीन से काम करते समय अनेक दुर्घटनाएं घटीं। इस खतरनाक विस्फोटक से काम करने को सुरक्षित बनाने की नोबेल ने मन में ठान ली। अधिक प्रयत्न के पश्चात् आखिर नोबेल अपने कार्य में सफल हुए। उन्होंने नाइट्रोग्लीसरीन को 'कीससेलगँर' में मिलाकर डाइनामाइट तैयार किया। उन्होंने एक प्रकार का बारूद, जिसे blasting jelly कहते हैं और धुम्रां रहित गनपाउडर का भी आविष्कार किया।

परन्तु जब उन्हें मालूम हुआ कि उनके द्वारा आविष्कृत वस्तुओं से मनुष्य को ही तबाह करने तथा मारने के उपयोग में ला रहा है तब वे बहुत ही दुखी हुए। वे तो इन वस्तुओं को शान्ति तथा निर्माण कार्यों में लाना चाहते थे।

नोबेल ने तब अपनी वसीयत में अपनी सम्पत्ति का एक भाग नोबेल पुरस्कार के रूप में घोषित किया। यह पुरस्कार रसायन-विज्ञान (Chemistry), भौतिक विज्ञान (Physics), चिकित्साशास्त्र (Medicine) या शरीरविज्ञान (Physiology), साहित्य तथा शान्ति को बढ़ावा देने वालों को प्रति वर्ष दिया जाता है। इस पुरस्कार को पाने वाले को धन तथा सम्मान से सुशोभित किया जाता है। सबसे प्रथम नोबेल पुरस्कार सन् १९०१ ई० में दिया गया था।

**प्र० : सर्दियों में सवेरे-सवेरे मुंह से भाप निकलती नज़र क्यों आती है ?**

**विनोद जितमक बगड़िया**

उ० : सर्दियों में हमारे मुंह से जो हवा निकलती है उसका ताप और हमारे शरीर का ताप बराबर होता है। परन्तु बाहरी वातावरण का ताप कम होता है। इसी कारण वह हवा जम जाती है और भाप जैसी नज़र आती है।

**प्र० : हिप्नोटिज्म कोई कला या विज्ञान है या केवल धोखेबाज़ी ? इसका प्रयोग किस प्रकार किया जाता है ?**

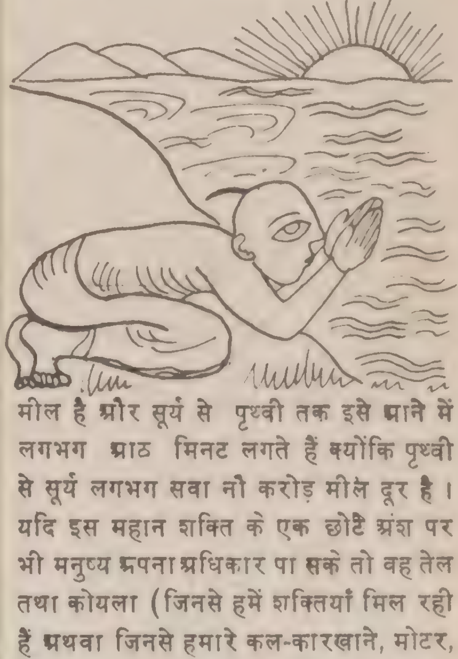
**एस. सी. बासरानी—कटनी**

उ० : हिप्नोटिज्म बेहोशी या मूर्च्छा की अवस्था होती है जैसी कि गहरी नींद के समय होती है। जब कोई व्यक्ति इस दशा में होता है तब वह हिप्नोटिस्ट की हर आज्ञा का पालन करता है। कभी-कभी यह आज्ञा पालन करने की अवस्था बेहोशी से निकलने तक चलती रहती है।

हिप्नोटिज्म को मानसिक रोगों को दूर करने तथा ऐनेस्थीसिया के बिना सरजरी करने में सफलतापूर्वक इस्तेमाल किया जा चुका है। परन्तु अभी तक यह सिद्ध नहीं किया गया कि हिप्नोटिज्म क्या है या अच्छे आदमी को इसके प्रभाव के समय बुरे काम करने पर मजबूर किया जा सकता है। प्रत्येक व्यक्ति को हिप्नोटाइज नही किया जा सकता।

**प्र० : सूर्य को देवता रूप में पूजने का क्या महत्व है ?**

उ० : प्राचीन धर्मशास्त्रों में सूर्य को भगवान के रूप में माना गया है। उसके बिना सृष्टि नहीं चल सकती क्योंकि पृथ्वी के जीव, सूर्य से प्रकाश व गर्मी लिए बिना जीवित नहीं रह सकते। वैज्ञानिकों के अनुसार सूर्य भी और ग्रहों की भांति एक ग्रह है और पृथ्वी के निकटतम ग्रहों में से है। इसका व्यास ८६४,००० मील है। इससे हमें प्रकाश एवं गर्मी प्राप्त होती है। सूर्य पृथ्वी से लगभग १,३००,००० गुणा बड़ा है। सूर्य की सतह का तापमान लगभग ६०,०० डिग्री सेन्टीग्रेड है अथवा इस प्रकार समझिये कि सूर्य अपने पृष्ठ भाग के प्रत्येक वर्ग इंच से सदा ६० अश्व सामर्थ्य इंजन (Horse Powre Engine) की शक्ति हमें प्रदान कर रहा है। परन्तु पृथ्वी को सूर्य की किरणों द्वारा मिलने वाली शक्ति के २२० करोड़ भाग का केवल एक भाग मिलता है। सूर्य की किरणों द्वारा पृथ्वी पर प्रति सेकेण्ड आने वाली शक्ति का मूल्य २००,०००,००० पौंड या लगभग २८० करोड़ रुपया आंका गया है। प्रकाश की गति एक सेकेण्ड में १८६,०००



मील है और सूर्य से पृथ्वी तक इसे आने में लगभग आठ मिनट लगते हैं क्योंकि पृथ्वी से सूर्य लगभग सवा नौ करोड़ मील दूर है। यदि इस महान शक्ति के एक छोटे अंश पर भी मनुष्य अपना अधिकार पा सके तो वह तेल तथा कोयला (जिनसे हमें शक्तियां मिल रही हैं अथवा जिनसे हमारे कल-कारखाने, मोटर, रेल, आदि चल रहे हैं) के समाप्त होने वाले भय से निश्चित हो जावें, क्योंकि संसार का तेल व कोयला भविष्य में समाप्त भी हो सकता है।

**प्र० : गांवों में घरों का मुंह पूर्व की ओर रखना शुभ क्यों समझा जाता है ?**

उ० : घर का मुंह पूर्व की ओर होने से सर्वप्रथम सूर्य की किरणें घर के अन्दर प्रवेश करती हैं जो अनेक रोगों के कीटाणुओं को नष्ट कर देती हैं। गर्मी एवं जाड़े के दिनों में भी पछुवा गर्म लू तथा ठंडी हवा से गृह सुरक्षित रहता है।

# मंगू-गंगू और कालू-बालू

● मुक्ति नाथ दुबे

गांव के मंगू और गंगू ने मिल कर सांझे की खेती करने का निर्णय किया । दोनों ने खेती की जोताई-गोड़ाई की । गेहूं का बीज बोकर बिलकुल निश्चिन्त हो गए । फसल उगने पर दोनों ने सिंचाई भी की तथा जब फसल बड़ी होने लगी तो, उसे घास फूस से बचाने के लिए निराई भी कर दिया ।

अब गेहूं की अच्छी फसल खेत में लहलहाने लगी थी । जब भी गंगू और मंगू खेत की मेंड़ पर बैठते, उनके अन्दर मारे खुशी के नये खून का संचार होने लगता था । 'किसानों को और चाहिए भी क्या ? उन्हें तो अपनी फसल ही प्रिय होती है ।' गंगू और मंगू को भी अपनी लहलहाती फसल प्रिय लग रही थी । तभी तो दोनों देख कर अपने अन्दर नये खून का संचार महसूस करते थे ।

जब फसल पक कर बिलकुल तैयार हो गई तो, दोनों ने उसे काट कर बराबर बंटवारा कर लेने का निश्चय किया । गंगू बहुत चालाक आदमी था । जब कि गंगू निरा मूर्ख, उस बेचारे को परिश्रम से काम करना आता था । चालाकी और होश्यारी उसे बिलकुल नहीं आती थी । जब दोनों फसल काटने खेत के अन्दर गए तो मंगू ने गंगू से कहा था ।

"फसल का बटवारा सही तरीके से होगा ।"

"मुझे मंजूर है ।"

"ठीक है ! फिर बालियां मैं काट लेता हूं, और डंठल तुम । मुझे दाना मिल जाएगा और तुम्हें भूसा ।"

गंगू मूर्ख तो था ही । उसने मस्तिष्क पर जोर लगा कर यह नहीं सोचा कि सारा अनाज मंगू ले रहा है और भूसा उसे मिल रहा है । उसने बिना कुछ सोचे-विचारे इस तरह के बटवारे को मान लिया था । बात उसे तब समझ में आई, जब उसके बीवी बच्चों ने समझाया । विश्वास उसे तब आया जब पूरे गांव में खुसर-फुसर होने लगी । गंगू की बीवी ने काफी शोर-शराब किया, और गांव वालों ने भी गंगू को समझाया । लेकिन उसने यह कह कर टाल दिया कि "अब बंटवारा हो चुका है । मैं दोबारा बंटवारा करके मित्रता को कलंकित नहीं कर सकता ।"

मंगू अच्छी तरह से समझ गया कि गंगू को मेरी मित्रता पर पूर्ण विश्वास है । तभी तो गांव और घर वालों की बातों में नहीं आया ।

दूसरी बार मंगू और गंगू ने फिर से सांझे की खेती की । अब की बार उन्होंने गन्ना बोया । गन्ने की फसल जब तैयार हो गई तो, मंगू ने फिर गंगू से बटवारे की बात कही । वह जल्दी से बंटवारा कर लेना चाहता था क्योंकि सारे किसान अपना-अपना गन्ना चीनी मिलों पर ले जाकर बेचने लगे थे । मंगू भी पूरे खेत का गन्ना शीघ्र ही बेच देना चाहता था । आखिर दोनों बटवारे के लिए खेत में गए तो मंगू ने गंगू से कहा ।



"भैया ! पिछली बार फसल का निचला हिस्सा तुमने लिया था ।"

"हां बिलकुल ठीक ।" गंगू ने गम्भीरता से उत्तर दिया ।

"लेकिन अबकी बार फसल का निचला हिस्सा मैं लूंगा और ऊपर वाला तुम ।"

"मुझे मंजूर है ।"

गन्ने का ऊपरी हिस्सा हरे भरे पत्तों-युक्त (गेंड़) गंगू को मिला, और पूरा गन्ना मंगू ने हथिया लिया । ओफ़ ! कितना होश्यार आदमी था मंगू । इस बार भी गंगू को ठग लिया । सारा गन्ना चीनी मिल को दे आया जिसके बदले में चीनी मिल ने मंगू को दो हजार रुपये दिया । पिछली फसल पर मंगू खुश तो था ही, इस फसल से भी खुश हो गया ।

अबकी बार फिर गांव वालों और उसके बीवी-बच्चों ने गंगू को समझाया था । तो गंगू ने अपनी मूर्खता पर सिर पीट कर सब्र कर लिया था, और वही अपना पुराना तकिया कलाम दोहरा दिया था । "लेकिन अब बटवारा हो चुका है । मैं दोबारा बंटवारा करके मित्रता को कलंकित नहीं कर सकता ।" इस पर गांव वाले और उसके बीवी-बच्चे फिर से चुप हो गए थे ।

अब फिर से तीसरी फसल के लिए दोनों हल-कुदाली लेकर खेत को तैयार करने में जुट गए थे । सवेरे आठ बजे से ही दोनों खेत में काम कर रहे थे । जब दोपहर हुई तो मंगू गंगू के बेटे कालू-बालू भी खेत की तरफ चले गए थे ।

मंगू के बेटे का नाम कालू था, और गंगू के बेटे का नाम बालू था । दोनों की उम्र में सिर्फ एक साल का अन्तर था । यह संयोग ही था, कि कालू और बालू दोनों एक दूसरे के मित्र थे । दोनों न्यायप्रिय थे । परन्तु दोनों की अपने पिता के आगे कुछ भी पेश नहीं चलती थी ।

कालू और बालू ने खेत में पहुंचते ही अपने पिता से कहा था। "आप लोग घर जाकर रोटी खा लें। तब तक हम दोनों खेत में काम करते हैं।

मंगू और गंगू जब गांव में, अपने घर खाना खाने गए तो, कालू और बालू काम में जुट गए। गंगू का बेटा बालू कुदाली लेकर गोड़ाई करने लगा और मंगू का बेटा कालू घास निकालने लगा।

अभी बालू ने मुश्किल से चार ही बार कुदाली चलायी थी कि पांचवीं बार में टन्न की आवाज से कुदाली की धार झन्ना गई थी। बात उसके समझ में नहीं आयी तो वह कुदाली एक तरफ रख कर कालू को बुला लाया था। अब दोनों मिल कर खुरपी से उस जगह को गोड़ने लगे। लगभग पांच मिनट के बाद ही, उस जगह से एक छोटा सा बक्सा निकला। दोनों ने उसे खोल कर देखा तो, उनकी आंखें चौंधिया गईं। वह बक्सा सोना-चांदी, हीरे-मोती और नकदी से भरा हुआ था।

उन दोनों को एक छोटा सा खजाना मिल गया। दोनों ने उस खजाने को अपने पिता की गैरहाजिरी में आधा-आधा बांट लेने का फैसला कर लिया। कालू ने बालू से कहा। "अब तक फसलों का बटवारा मेरे पिताजी करते रहे हैं जिससे तुम्हारे पिता जी को हमेशा नुकसान होता रहा है। लेकिन अबकी बार इस बक्से का बटवारा मैं करूंगा।"

"ठीक है, मुझे मंजूर है।" बालू ने गम्भीरता से उत्तर दिया था।

"तो फिर सुनो।" "बक्से के अन्दर का माल तुम लोगे और बक्सा मैं लूंगा। बोलो ठीक है बंटवारा या नहीं।"

इतना सुनते ही बालू समझ गया कि 'मेरा दोस्त सारा धन तो मुझे दे रहा है और खाली बक्सा आप ले रहा है।"

बालू ने काफी जोर लगाया था कि आधा धन कालू भी ले जाए। परन्तु उसकी जिद के आगे वह मजबूर हो गया। कालू ने उसके सिर से गम्छा (पगड़ी) उतार कर सारा धन स्वयं बांध दिया और कहा "लो. जाओ अपने घर छोड़ आओ।"

बालू ने धन की गठरी घर जाकर अपनी मां को दे दी थी तथा मां से सारी बातें साफ-साफ एक ही सांस में कह सुनायीं थीं। उसका बाप गंगू खाना खाकर अभी हाथ-मुंह धो रहा था। उसने भी बालू की बातें ध्यान से सुनीं। मन ही मन मुस्कराया भी।

उधर कालू भी जब खाली बक्सा घर लेकर आया तो अपने मां बाप को सारी बात सही-सही बता दी। उसका बाप मंगू उस समय खाना खा कर बीड़ी पी रहा था। बेटे की मूर्खता पर उसे बड़ा क्रोध आया और चिल्ला कर सारा गांव इकट्ठा कर लिया। "हाय मैं लुट गया! अरे गांव वालों इन्साफ करो! सही बंटवारा नहीं हुआ। मेरा बेटा पागल है, मूर्ख है।"

गंगू भी बीड़ी पीते हुए गांव वालों के सामने उपस्थित हो गया, और धुंआ उगलते हुए वही अपना पुराना तकिया कलाम फिर से दोहरा दिया था। "अब बंटवारा हो चुका है, मैं दोबारा बंटवारा करके मित्रता को कलंकित नहीं कर सकता।"

इतना सुनते ही गांव वालों ने एक जोरदार ठहाका लगाया और अपने-अपने घर को चल दिये थे। ●

## गेंद ढूंढिये प्रतियोगिता



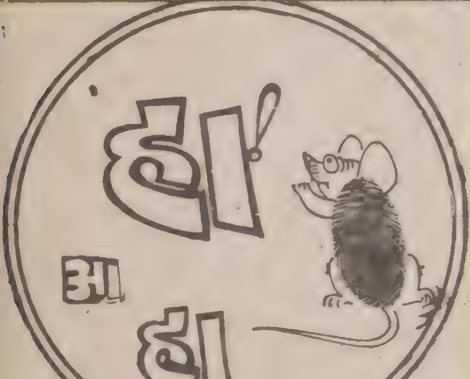
नाम

पता

**दीवाना की इस नई प्रतियोगिता में भाग लेकर ३० रुपये जीतिये** दी गई तस्वीर में से गेंद को मिटा दिया गया है, जहाँ आप समझते हैं कि गेंद को होना चाहिये वहाँ आप केवल (×) का निशान बना दीजिये। आप एक से ज्यादा प्रवेश पत्र भी भेज सकते हैं पर प्रत्येक प्रवेश पत्र के साथ कूपन होना अनिवार्य है। एक तस्वीर पर केवल एक ही स्थान पर निशान लगाइये। एक से अधिक स्थानों पर निशान लगाने पर उस तस्वीर को प्रतियोगिता में शामिल नहीं किया जायेगा। कूपन भर कर तस्वीर सहित, आज ही भेजिये यदि इस प्रतियोगिता के एक से अधिक विजेता हुये तो इनाम की राशि उनमें बराबर-बराबर बांट दी जायेगी। सम्पादक का फैसला आखिरी फैसला होगा। **अन्तिम तिथि १९ जनवरी १९७६**


फैण्टम
और कुला-कु की जादूगरनी
इसको लुहार के पास ले जाओ, वह इसके हथकड़ी डाल देगा, फिर इसे वापस मेरे पास ले आना। मैं इस नकाबपोश के बारे में बहुत कुछ जानना चाहती हूं।
कुला-कु की रानी
दास आगे बढ़ो।
इससे पहले कि यह कोई खतरा पैदा करे इसे मार देना चाहिए।
उलरिच थोड़ा धीरज रखो, यह हमारे अजायब घर की शोभा और बढ़ाएगा।
?
उलरिच तुम्हारे गाल पर यह निशान कैसा? पहले तो मैंने कभी
?
……नहीं देखा। कुछ खोपड़ी जैसा लगता है।
यहीं पर उस नकाबपोश दास ने मुझे मारा था। यह निशान अब नहीं निकलेगा।
मैं उसे मार दूंगा।
धीरज रखो उलरिच, तुम्हें इसका अवसर मिलेगा। तब तक तुम इसे साबुन से धोने की कोशिश करो।
रानी को चिड़ियां और जंगली जानवर बहुत पसन्द हैं। वह चुने हुए जानवरों की खाल में भूसा भरवा कर रखती है।
यह तो मैं देख रहा हूं…पर वह क्या है?
यह रानी का सेनापति था जो लड़ाई में मारा गया। रानी इसे बहुत चाहती थी और अपने चाहने वालों को मरने के बाद भी सुरक्षित रखती है।
?!
क्या उसने अपने और भी चाहने वालों को इस तरह सुरक्षित रखा हुआ है?
और चाहने वाले इससे भिन्न हैं।
इससे भिन्न?
जो लोग उसे नाराज करते हैं यह उनके लिए चेतावनी है।
डेविल!
दास, पिंजरों से दूर रहो।
रानी को तुम बहुत पसन्द हो, पहले वह तुमसे लड़ाई कराएगी फिर मरने के बाद तुम्हें भी सुरक्षित रखेगी।
?!
ये दासों के क्वाटर हैं। वह तुम्हें कुछ समय तक यहां रखेगी।
यह क्या है? नहीं, नहीं, यह कौन है?




एक हट्टा-कट्टा आदमी टेलीफोन पर बात करने जाते समय अपना टोप रेस्ट्रां की मेज पर छोड़ गया और उसमें एक चिट नत्थी कर गया। 'यह टोप चैम्पियन पहलवान का है। और मैं वापिस आने वाला हूं।'

जब वह वापिस आया तो मेज खाली पड़ी थी। वहां दूसरा नोट पड़ा था—'तुम्हारा टोप एक चैम्पियन दौड़ने वाला ले गया है। और अब मैं वापिस नहीं आऊँगा।'

●

एक होटल में यह विज्ञप्ति टंगी थी—'महाशय! यदि आप कप-प्लेट में सिगरेट की राख झाड़ना चाहें तो हमें कोई ऐतराज नहीं होगा, पर इसकी सूचना कृपया वेटर को दे दें, ताकि वह आपके लिए एशट्रे में चाय ला सके।'

●

उस प्रोग्राम में गीत गाते-गाते भी उस महिला की नजर पिछली सीट पर बैठे एक व्यक्ति पर ही थी, जो शायद भावातिरेक के कारण अपने आँसू नहीं रोक पा रहा था। गीत समाप्त करते ही वे उसके पास पहुंचीं और बोलीं, 'आप बहुत भावुक लगते हैं। क्या आप कोई कवि हैं?'

'जी नहीं, संगीतज्ञ हूं।' उत्तर मिला।

●

नौसेना में नई-नई भर्ती हुई थी। नौजवानों को समुद्र में तैरने का प्रशिक्षण दिया जा रहा था। एक नवयुवक से प्रशिक्षक ने १५ फीट ऊँचे एक बोर्ड से समुद्र में छलांग लगाने को कहा तो उसने ऐसा करने से साफ इन्कार कर दिया। इस पर प्रशिक्षक ने झुंझला कर कहा, 'यदि तुम किसी डूबते हुए जहाज में इतनी ऊँचाई पर हुए तो क्या करोगे?'

'जहाज जब तक १० फीट और न डूब जायेगा तब तक मैं इन्तजार करूँगा, नवयुवक ने सोचते हुए जवाब दिया।

●

एक प्रसिद्ध लेखिका और एक सुन्दर समाजनेत्री में बहुत चलती थी। किसी समारोह में देश के प्रधान मंत्री से उनकी भेंट हो गई और लेखिका ने अपनी शत्रु को छकाना चाहा।

'यदि मैं और ये बहन जी दोनों एक साथ पानी में गिर पड़ें तो पहले आप किसको निकालना पसन्द करेंगे?'

प्रधान मंत्री पुराने घाघ थे, मुस्कराकर बोले, 'देवी जी, आप तो अच्छा तैरना जानती हैं।'

●

'तुमने छुट्टी ली थी कि तुम्हें अपने दाँत के डाक्टर के जाना था! लेकिन मैंने तुम्हें फुटबाल मैच में देखा था।' मालिक ने क्रोध में क्लर्क से पूछा।

'जी हाँ! मेरा दाँत का डाक्टर गोलकीपर है।'

●

हस्य कथा

# यांत्रिक दिमाग का रहस्यमय मज़ाक

यंत्र मानव युग

## गतांक से आगे

आपने पढ़ा कि दिल्ली नगरपाल के चुनाव प्रत्याशी कृपा कुमार पर उसके विरोधी उम्मीदवार राजा राम ने यंत्र मानव होने का आरोप लगाया था। कृपा कुमार ने यंत्र मानव निगम के डा० भटनागर व डा० सुधा के सामने सेब खाकर यंत्र मानव न होने का सबूत देने का प्रयत्न किया। डा० सुधा ने इसे प्रमाण नहीं माना। स्वयं कृपा कुमार ने कहा कि वह अभी जनता में अपना यंत्रमानव न होना जान-बूझकर प्रमाणित नहीं करेगा, ताकि वह राजाराम पर आखिरी मौके पर वार कर सके—उससे आगे।

बम्बई से लौटते ही कृपाकुमार अपने चुनाव दफ्तर नहीं गये अपितु उनकी कार दिल्ली नगर से बाहर गुड़गांवा के पास अपने निजी फार्म की ओर दौड़ने लगी। फार्म के गेट से कार सीधी दनदनाती हुई अन्दर गयी और बरामदे के पास जाकर रुक गयी। कृपाकुमार बाहर निकलकर सीधे बरामदे की ओर बढ़े। बरामदे में व्हील चेयर पर एक अत्यन्त क्षीण झुर्रीदार चेहरे वाला हड्डियों का ढांचा बैठा था। उसकी टांगें चेयर से लकड़ियों की तरह लटक रही थीं जो यदा-कदा झूलने लगतीं। स्पष्ट था कि वह व्यक्ति अपंग था, उसकी दोनों टांगें बेकार थीं। कृपाकुमार को देखते ही उस अपंग वृद्ध की आंखें चमक उठीं। उसने मुस्कारने का प्रयत्न किया तो चेहरे की झुर्रियां गालों पर लहरों की तरह बाहर की ओर जमा हो गयीं। बूढ़े के चेहरे पर घाव के निशान थे। क्षीण स्वर में बूढ़ा बड़बड़ाया, 'कृपा बेटे, तुम्हें देर हो गयी।' 'मुझे अफसोस है बाबा'। कृपाकुमार ने स्पष्टीकरण दिया, 'आज एक अजीब हादसा हो गया। मुझे बम्बई जाना पड़ा!'

बूढ़े ने चिन्तित स्वर में पूछा, 'हादसा? कैसा हादसा बेटे? तुम सम्भाल सकते हो न?'

कृपाकुमार ने खड़े-खड़े दोनों हाथ उठा कर उत्तर दिया, 'मैं कह नहीं सकता बाबा। मुझे शायद तुम्हारी जरूरत पड़े। घर के बुर्जुग तो आप ही हैं न। आइये आपको बाग में ले चलूं, कितनी सुहानी शाम है।'

तथाकथित बाबा को कृपाकुमार ने अपने बलिष्ठ हाथों से कुर्सी पर से उठा लिया बहुत सावधानी से जैसे कोई कांच का बहुत कीमती बर्तन या सज्जा कृति हो। कृपाकुमार की बांहें उसकी गर्दन तथा घुटनों के नीचे से उसे सहार रही थीं। बरामदे से धीमे कदमों से उतर कृपा कुमार उसे मकान के पिछवाड़े ले गया जहां घने वृक्षों वाला सुन्दर सा बाग था। बूढ़े ने वात्सल्यपूर्ण स्वर में कहा, 'बेटे, व्हील चेयर पर बैठ कर मुझे आने दिया होता।'

कृपाकुमार ने दुलार भरी वाणी से बूढ़े को निरुत्तर कर दिया, 'बाबा, मैं आपको स्वयं उठाना चाहता था। मैं जानता हूं कि कुर्सी को चलाते-चलाते आप कितने थक जाते हैं, और आप भी तो उस मोटर चालित व्हील चेयर पर बैठे-बैठे बोर हो गये होंगे। उसे छोड़ने का दिल कर रहा होगा। अब बताइये आपको कैसा लग रहा है?'

कृपाकुमार ने बूढ़े को नर्म घास पर सावधानी से लिटाया। 'मेरा क्या है बेटा?' बूढ़े ने पराजित उसांस ली, 'तुम बताओ किस हादसे की बात कर रहे थे?'

कृपाकुमार का चेहरा गंभीर हो गया। अपना मुंह लगभग बूढ़े के कान के पास ले जाकर बोला, 'बाबा, मेरे प्रत्याशी राजाराम का दावा है कि मैं यंत्र मानव हूं। उसका सारा चुनाव प्रचार केवल इसी एक बात पर केन्द्रित होगा।'

बूढ़े की आंखें फैल गयीं, 'यह कैसे संभव है? मैं नहीं मान सकता।'

कृपाकुमार ने अपनी बात पर बल दिया, 'बाबा, यह सही है। उसने यह आरोप यंत्र मानव निगम के डा० भटनागर व डाक्टर सुधा के सामने लगाया। उसी सिलसिले में तो मैं आज बम्बई जाकर लौटा हूं।'

बूढ़े ने अपने कव्वे के पंजों जैसे हाथों से घास उखाड़ना शुरू किया, 'हूं! यह बात है।'

कृपाकुमार बोला, 'बाबा, मैं उसे उसका अपना प्रचार इसी एक बात पर केन्द्रित करने देना चाहता हूं। मुझे एक आइडिया सूझा है, जरा उसे सुनिये और मुझे बताइये कि वह संभव है या नहीं...।'

अब हम आपको दोबारा यंत्र मानव निगम के अध्यक्ष डाक्टर भटनागर के दफ्तर में लिये ले चलते हैं। इस समय उनके साथ सुधा और राजाराम बैठे हैं। राजाराम ने हाथ में अनजली सिगरेट को तौलते हुए कहा, 'मुझे पता है कृपाकुमार ब्लफ मार रहा है। दिल ही दिल में तो वह भयभीत है।'

सुधा ने आश्चर्य से राजाराम को देखा, 'आपको अब तक भी यकीन है कि कृपाकुमार यंत्र मानव है? क्या अब भी आप अपना सारा चुनाव प्रचार इसी बात पर केन्द्रित करेंगे? यह तो एक बहुत बड़ा जुआ होगा।'

'जुआ? इसमें जुये वाली क्या बात है?' राजाराम अविचलित था। 'देखिये' भटनागर ने खीज कर कहा, 'आपने जो हमें करने के लिये कहा था, वह हमने कर दिया। हमने अपनी आंखों से उसे खाते देखा। यह कहना सरासर मूर्खता होगी कि वह एक यंत्र मानव है।'

'आप ऐसा सोचते हैं?' राजाराम उत्तेजित हो गया फिर सुधा की ओर मुड़ कर बोला, 'आप विशेषज्ञ हैं। आप बताइये।'

डा० सुधा ने तीखी दृष्टि डा० भटनागर पर फेंकी फिर राजाराम की ओर देखकर बोली, 'महाशय, कृपाकुमार को यंत्र मानव साबित करने के केवल दो उपाय हैं। आपका आरोप आदमियों के बयान पर आधारित है। यह केवल आरोप मात्र है, आप प्रमाणित नहीं कर सकते। कृपाकुमार स्वयं वकील हैं। आपके

रोपों को वे काट देंगे । उसे यंत्र मानव बित करने के दो उपायों में भौतिक व ोवैज्ञानिक दोनों हैं । भौतिक रूप से आप ाकुमार को चीर-फाड़ करें या डिस्मैंटल र सकते हैं या एक्सरे ले सकते हैं । यह कैसे गा—मैं नहीं जानती । यह आपकी समस्या । हाँ, मनोवैज्ञानिक उपाय में यह हो सकता कि उसके व्यवहार का अध्ययन किया जाये । द वह यंत्र मानव है तो यंत्र मानवों के नों नियमों का पूर्णतया पालन करेगा । मान राजाराम जी, आप यंत्रमानवों के यमों से परिचित हैं ?'

राजाराम के उत्तर की प्रतीक्षा किये ना सुधा ने यंत्र मानव के तीनों नियम उस ार कहने शुरू किये जिस प्रकार किंडर र्डन का छात्र टिवकल-टिवकल पोयम सुना ा हो ।

'मैंने सुन तो रखा है ।' राजाराम ने विकार भाव से कहा ।

'फिर भी मामला सीधा नहीं है' । यंत्र नव मनोविज्ञान विशेषज्ञ ने कहा, 'यदि ाकुमार तीनों यंत्रमानव नियमों में से कोई तोड़ते हैं तो वह निश्चय ही यंत्र मानव नहीं हैं कहना आसान है, परन्तु कसौटी पर परखना कठिन, हमारे अपने मानव समाज के नैतिक सिद्धान्त भी इनसे बहुत मिलते हैं । यंत्र मानव का तीसरा सिद्धान्त है अपनी रक्षा करना, मनुष्य भी अपनी रक्षा स्वभावतः करता है । यंत्र मानव का दूसरा नियम कहता है कि यंत्र-मानव मानव की आज्ञा का पालन करेगा । स्वयं मनुष्य विशेषज्ञों की आज्ञा का पालन करता है । एक अच्छा नागरिक तथा अति उत्तम व्यक्ति अपने बुजुर्गों, अपने डाक्टर, अपने शिक्षक, अपने अफसर, सामाजिक नियम तथा देश के कानूनों की आज्ञाओं का पालन करता है । यंत्र मानव का नियम तीन कहता है कि अपने किसी कार्य अथवा निष्क्रियता से किसी मानव को हानि नहीं पहुंचनी चाहिये । यही बात भगवान बुद्ध, कबीर, गुरु नानक, ईसा, मुहम्मद तथा महात्मा गांधी कह गये हैं । सीधे शब्दों में यदि कृपाकुमार इन सब नियमों का पालन करते हैं तो हम एक दम उन्हें यंत्र मानव नहीं कह सकते । हो सकता है वह एक आदर्श मनुष्य हों ।'



राजाराम ने उत्तेजित स्वर में कहा, 'आपके कहने का अर्थ यह है कि आप उन्हें यंत्रमानव प्रमाणित नहीं कर सकते ?'

सुधा ने शान्त उत्तर दिया, 'मैं केवल यह साबित कर सकती हूं कि वह यंत्र मानव नहीं हैं ।'

'मुझे ऐसे प्रमाण की आवश्यकता नहीं है ।' राजाराम क्रोधित स्वर में हुंकारा ।

सुधा ने उसी तेजी में उत्तर दिया, 'जो प्रमाण संभव है वही आपको मिलेगा । आपको किस चीज की आवश्यकता है, किस चीज की नहीं—उससे हमें मतलब नहीं ।'

डा० भार्गव एकाएक उछले, 'अरे भई, जरा सोचो कृपाकुमार यंत्र मानव होता तो सरकारी वकील कैसे होता ? उसके बहस के फलस्वरूप किसी को फांसी हो सकती है, कैद हो सकती है । इस प्रकार एक यंत्र मानव मनुष्यों को हानि व आघात कैसे पहुंचायेगा ?'

डा० सुधा ने असहमति पूर्ण स्वर में भटनागर को लताड़ा, 'डा० भटनागर, यदि एक यंत्र मानव को ऐसा पागल आदमी मिले जो एक घर को, जिसमें आदमी भरे हों, आग लगाने जा रहा हो तो वह क्या करेगा ? जरूर रोकेगा चाहे उसे जान से मारना पड़े क्योंकि उससे वह अधिक मनुष्यों को आघात पहुंचाने से बचायेगा । यदि कृपाकुमार ने खूनी कातिलों को सजा दिलाई है तो लाखों लोगों को उनके आघातों तथा हानियों से बचाया है । इस प्रकार उसने वास्तव में यंत्र मानव के प्रथम नियम का पूर्णतया पालन किया है । एक बात और ध्यान देने लायक है उसने कभी किसी को फांसी की सजा की माँग नहीं की । एक विशेष पेच यह भी है कि कृपाकुमार तो केवल बहस करता है । सजा तो जज देता है । फाँसी या कैद जेल के अधिकारी करते हैं ।'



क्रमशः

पृष्ठ १२ से आगे

काज नहीं करता था, फिर भी उसका धन बढ़ने लगा। रूपचन्द्र को यह मालूम था कि स्वर्ग से कांचनमाला यह सब धन भेजती है।

यह जानते हुए भी रूपचन्द्र एक बार व्यापार करने गया। वह उस ताड़ के पेड़ के नीचे से गुजर रहा था कि ऊपर से एक बूंद गर्म आंसू की गिरी। रूपचन्द्र ने जैसे ही ऊपर ताककर देखा, तो बादल के रंग के बाल दिखाई पड़े और किसी का आंचल भी झूल रहा था। रूपचन्द्र ने हाथ बढ़ाकर आंचल खींचा। कांचनमाला उस पेड़ पर बैठी थी। वह नीचे आती हुई बोली—

'हाय, यह तुमने क्या किया ? मैं तो सुखी हो जाऊंगी, परन्तु मालिन की बहिन की लड़की हमेशा के लिए गई। आज रात को ही मेरी बहिनें उसे जीवित कर देतीं, परन्तु तुमने मुझे छू दिया। अब मेरी बहिनें स्वर्ग से नहीं उतरेंगी।'

यह सुनकर व्यापारी रूपचन्द्र सिर पर हाथ देकर बैठ गया, परन्तु कांचनमाला बोली—'जो हुआ सो हुआ, चलो, अब हम लोग गृहस्थी करें। आज से सात दिन बाद मैं मालिन की बहिन की लड़की को जिला दूंगी, परन्तु एक शर्त है कि रात में मैं क्या करूँ, क्या न करूँ, इससे तुम कोई वास्ता नहीं रखोगे।'

रूपचंद्र ने मंजूर कर लिया। एक दिन रात को उसने देखा कि कांचनमाला कमरे में नहीं है। रूपचन्द्र नींद का ढोंग रचाकर पड़ा रहा। रात के अंतिम पहर में कांचनमाला लौट आई, परन्तु रूपचन्द्र कुछ नहीं बोला। अगले दिन रूपचन्द्र कपट-निद्रा में पड़ा रहा। आधी रात के समय 'सन्-सन्' की आवाज हुई। कांचनमाला ने धीरे से उठकर पति को दो बार पुकारा, परन्तु कोई आवाज नहीं आई। तब उसने पति के पैरों से माँग छुआई और बोली—

'मेरे देवता, मैं लौट आऊँ, यह आशीष मुझे दो।'

रूपचन्द्र पीछे-पीछे गया, तो उसने देखा कि एक रथ है। चुपके से रूपचन्द्र ने अपनी कमर को रथ के पीछे बाँध लिया। रथ स्वर्ग की तरफ चल पड़ा।

स्वर्ग में रथ पहुंचा ही था कि सात बहिनों ने कांचनमाला का हाथ पकड़कर इन्द्रसभा में ले लिया और सब बहिनें नाचने लगीं। परियों का यह नाच ऐसा था कि वह देखकर मुग्ध हो गया। परन्तु काना तबलची कई बार गलत बजा गया। इससे झुंझलाकर रूपचन्द्र ने जाकर तबला पकड़ लिया। काने तबलची की जो आंख खराब थी, उस तरफ से रूपचन्द्र आया। इसीलिए उसे कुछ पता नहीं लगा और न दूसरों को ही कुछ पता लगा।

जब सभा समाप्त हो गयी तो रूपचन्द्र उसी चालाकी से लौट आया और पहले ही सो गया।

इसी प्रकार रूपचन्द्र रोज जाता-आता रहा। एक दिन वह रथ के पीछे सो गया, जिससे कि रथ ऊपर नहीं चढ़ पाया। उस दिन बड़ी कठिनाई से रथ ऊपर जा पाया। माला ने उस समय पति को देख लिया, परन्तु गुस्सा होने के बजाय उसने कहा—

'अनजान में मैं ऊपर बैठी रही, मुझे माफ करो।'

उस समय रथ स्वर्ग में था। कांचन इन्द्रसभा में गई, पर उस दिन नाच नहीं जमा। जब इन्द्र ने इसका कारण पूछा तो सात बहिनों ने सारी कहानी कह सुनाई। सुनकर इन्द्र बोले—

'अच्छी बात है। जब कांचन का विवाह हो गया है तो वह जाकर अपने पति का घर बसावे। अब उसका नाचना-गाना बन्द होता है।'

इन्द्र ने रूपचन्द्र को बुलाकर उसे भी आशीर्वाद दिया और जिस रथ पर वे आते थे, उसे पुरस्कार के रूप में दे दिया। कांचन ने अपनी सखी को जिलाने के लिए इन्द्र के हाथ से उनके हाथ का पंखा भी माँग लिया। इन्द्र ने उसे भी दे तो दिया, परन्तु इस बात की चेतावनी दे दी कि कहीं पंखे की उलटी हवा उसकी सखी को न लग जाय। इसके बाद दोनों मालिन की बहिन की लड़की को जिलाने के लिए वहां से चल पड़े।

दूसरी तरफ जब से मालिन की बहिन की लड़की ताड़ के पेड़ के रूप में हो गई थी, तब से मालिन पागल होकर इधर-उधर घूमा करती थी। वह अपना यंत्र-मंत्र लेकर ताड़ के पेड़ के पास पहुंची। मालिन ने पूछा—'ताड़, तुम किसके ?'

ताड़ बोला—

'पहले मैं तुम्हारा था, परन्तु अब रूपचन्द्र व्यापारी का हूं।'

यह सुनकर मालिन जल उठी और गुस्से में बोली—

'अब तू व्यापारी को छोड़ दे नहीं तो तुझे जला डालती हूं।'

मालिन की इस धमकी के बावजूद भी ताड़ ने यही कहा कि मेरा पति व्यापारी है। इस पर गुस्सा होकर मालिन ने उसकी जड़ में घी और कपूर डालकर आग लगा दी। यह देखकर पेड़ रो उठा, परन्तु मालिन मानी नहीं। नतीजा यह हुआ कि ताड़ के पेड़ की जड़ जल गई और वह रूपसागर में डूब गया। साथ ही मालिन भी उसमें डूब गई।

इसके बाद स्वर्ग से रूपचन्द्र और कांचनमाला रूपसागर के किनारे पहुंचे, परन्तु वहां ताड़ के पेड़ का नाम-निशान तक नहीं था। यह देख दोनों को इतना दुख हुआ कि गश आ गया। उन्होंने इधर-उधर दौड़कर देखा कि कहीं कोई ताड़ का पेड़ चुरा कर तो नहीं ले गया।

बहुत खोज करने पर उन्होंने देखा कि पूर्णिमा की रात को रूपसागर में एक हजार पंखुड़ियों वाला कमल खिला हुआ है। वे देखकर ही पहचान गये कि यही वह कन्या है। वे अपने रथ द्वारा उस कमल के पास तक पहुंचे। उस समय असावधानी के कारण पंखे की उलटी हवा कमल में लग गई।

नतीजा यह हुआ कि कमल का फूल एक नाग बन गया। यह देख वे हाहाकार करने लगे और इन्द्र की सभा में पहुचे। इन्द्र ने कहा—

'अब तो कुछ हो ही नहीं सकता। बस मैं तुम दोनों को यह वरादान देता हूं कि तुम देवताओं की तरह सदैव युवा रहोगे। हर बारह वर्ष की प्रथम पूर्णिमा को यह कमल खिलेगा और उस रात तुम लोग उसके साथ आनन्द कर सकोगे। इसके अलावा और कोई उपाय नहीं है।

अब होता भी क्या, कांचनमाला और रूपचन्द्र लौट आए। जिस बात पर स्वयं इन्द्र भगवान का वश नहीं था, उस पर मनुष्य क्या कर सकते थे।

बारह वर्ष तक मालिनी की बहिन की लड़की नाग बनी रहती थी और मालिन मेंढकी बनकर उसके फन के नीचे बैठ कर थर-थर कांपती रहती थी। बारह वर्ष में एक बार वह नाग कमल बनता और उस कमल से वह सुन्दरी प्रकट होती और रूपचन्द्र जाकर उसे चूम लेता।

अन्त में अनेक कष्ट और बाधाओं का मुकाबला करनेकेबाद कांचनमाला और रूपचन्द्र के अच्छे दिन आए और वे सुखपूर्वक रहने लगे। मालिन भी पापों से बारह वर्ष में मुक्त हो गई। फिर वह भी एक कमल बन गई। ●●

# खेल खेल में

**न्द्रजीत सिंह छाबड़ा, दिल्ली**

प्र० : बिशन सिंह बेदी के कुल टैस्ट कितने हैं और इनका स्कोर क्या है ?

उ० : ४८ टैस्ट मैच (MCC श्रृंखला से पहले) टैस्टों का सर्वोच्च स्कोर ५० रन नॉट आउट कानपुर में न्यूजीलेंड के विरुद्ध ।

**द्रीप्रसाद वर्मा "अंजान" गोलाबाजारटाउन**

प्र० : भारत ओलम्पिक खेलों में क्यों असफल रहा ?

उ० : खेलों का तथा शारीरिक स्तर नीचा होने के कारण ।

**नी धाकर जैन, गोसलपुर**

प्र० : भारत के क्रिकेट के खिलाड़ियों में सर्वश्रेष्ठ कौन है ?

उ० : गेंदबाजी में बेदी तथा बल्लेबाजी में सुनील तथा विश्वनाथ ।

**ोहित कुमार जैन, बिजनौर**

प्र० : फारूक इन्जीनियर कहाँ हैं और उन्होंने अब तक कितने रन व कितने कैच और सटम्प आउट किये हैं ? उनका भविष्य कैसा है ?

उ० : इंजीनियर अब खेल जीवन के संध्याकाल में हैं । उनका टैस्ट रिकार्ड निम्न है ।

रन २६११, कैच आउट ६६ तथा स्टम्प १६ ।

**जय, केसरीसिंह पुर**

**ीलकुमार शर्मा किग्जवे कैंप, दिल्ली**

प्र० : सबसे पहले क्रिकेट का अन्तर्राष्ट्रीय टैस्ट मैच कहाँ और कब हुआ ?

उ० : मेलबोर्न में इंग्लैंड व आस्ट्रेलिया के बीच (एम. सी. सी. टीम भारत-श्रीलंका के दौरे के बाद टैस्ट क्रिकेट शताब्दी मैच खेलने मेलबोर्न जायेगी—अर्थात् १९७८ में पूरे १०० वर्ष हो चुके होंगे टैस्टों के) ।

**रशाद अहमद—राजेश भाटिया, पानीपत**

प्र० : गावस्कर, गलेन टर्नर, ऐमिस, किड्स-मजीद—इन चारों में सबसे अच्छा ओपनर-कौन है ?

उ० : गावस्कर तथा टर्नर ।

**रामकुमार साजनानी, बिलासपुर**

प्र० : खेलों को किसने शुरू करना चाहा ?

उ० : प्राकृतिक स्वभाव ने—आपने जानवरों तक को खेल किलोल करते देखा होगा । बाद में मनुष्य ने अपने जीवन को दिमाग के विकास के साथ-साथ सामाजिक नियमों से बाँध दिया । इसका प्रभाव खेलों पर भी हुआ और खेल भी नियमबद्ध हुये ।

**महेशचन्द्र रामदेव, जोधपुर**

**कृष्णदेव पाडेण्य, कलकत्ता**

प्र० : भारत ने सर्वप्रथम क्रिकेट टैस्ट मैच किस देश के साथ खेला एवं उस समय भारत के कप्तान कौन थे ?

उ० : सी. के. नायडू—१९३२ इग्लैंड के विरुद्ध ।

**प्रहलाद जसवानी, कृष्ण कन्हैया**

प्र० : न्यूजीलेंड पाकिस्तान के साथ बुरी तरह क्यों हार गया ?

उ० : न्यूजीलेंड की टीम घटिया दर्जे की थी ।

**राजेश खन्ना, शिवपुरी, (दिल्ली)**

प्र० : प्रसन्ना और वेंकटराघवन ने अब तक टैस्ट मैचों में कुल कितने रन बनाये हैं और उनका अधिकतम स्कोर कितना है ?

उ० : प्रसन्ना ५७३ रन उच्चतम ३७, वेंकट ६०५ रन उच्चतम ६४, (वर्तमान MCC श्रृंखला से पहले ।)

**दिनेश कुमार मटाई, इन्दौर**

प्र० : वेंकट राघवन ने कितने शतक मारे हैं व कितने विकेट लिये हैं, टैस्ट मैचों में ?

उ० : शतक कोई नहीं, १०९ विकेटें ली हैं ।

**राधेश सिंगल, मोगा**

प्र० : हैट्रिक ओवर किसे कहते हैं और आज तक संसार में किस देश के खिलाड़ी ने ऐसा किया है कृपया नाम बताएं ।

उ० : लगातार तीन बॉलों पर तीन विकटें लेना हैट्रिक कहलाता है । हैट्रिक करने वाले बॉलरों का विवरण हम पीछे छाप चुके हैं ।

**संजय किशोर श्रीवास्तव, ग्वालियर**

प्र० : विश्व में भारतीय क्रिकेट टीम कौन से नम्बर पर है ?

उ० : आस्ट्रेलिया—वेस्टइंडीज के बाद तीसरे, चौथे या पांचवें नम्बर पर—पाकिस्तान, इंग्लेंड व भारत की टीमें लगभग एक ही पायदान पर हैं ।

प्र० : सुनील गावस्कर के सबसे अधिक रन कब बने, (टैस्ट मैचों में) कितने व किस देश के विरुद्ध ।

उ० : २२० वेस्ट इंडीज के विरुद्ध ।

**शिशपाल चावला, कामठी**

प्र० : वेस्ट इंडीज के किस खिलाड़ी ने सबसे ज्यादा विकेट लिये हैं और कितने ?

उ० : लांस गिब्स ३०९ विकटें (यह विश्व का भी रिकार्ड है) ।

**प्रदीपकुमार, गुड़गावाँ**

प्र० : भारत, वेस्ट इन्डीज के विरुद्ध कितनी टैस्ट श्रृंखलाएं जीत चुका है, कृपया बताने का कष्ट करें ।

उ० : केवल एक १९७१ श्रृंखला ।

**दिनेश कुमार, मटाई इन्दौर**

प्र० : हम क्रिकेट खिलाड़ियों से पत्र-मित्रता करना चाहते हैं । कृपया इन खिलाड़ियों के पते बतावें, वाडेकर, पटौदी व गावस्कर !

उ० : वाडेकर व पटौदी रिटायर हो चुके हैं उन्हें चैन से रहने दीजिये । गावस्कर को पत्र-मित्रता में रुचि नहीं होगी । फिर भी प्रशंसा पत्र डालना हो तो बम्बई क्रिकेट एसोसियेशन वानखेड़े स्टेडियम की मार्फत भेजें ।

**शौकत बिन हमीद अलखान, सरधना (मेरठ)**

प्र० : वर्ल्ड कप हाकी की चैम्पियनशिप सबसे अधिक किस देश के पास और कितनी बार रही है ?

उ० : अब तक एक बार से ज्यादा किसी के पास नहीं रही—पाकिस्तान, हॉलैंड के बाद अब भारत के पास है ।

**नन्दलाल शर्मा 'बागड़ा', सुजानगढ़**

प्र० : भारत की क्रिकेट टीम के आलराउण्डर मदनलाल व महेन्द्र अमरनाथ ने टैस्ट जीवन में कितने विकेट लिए हैं ?

उ० : MCC श्रृंखला से पहले मदनलाल—१७ मेहिंदर—१०

**कुमारी सावित्री वर्मा, गोलाबाजार**

प्र० : महिला क्रिकेट टीम भारत में है या नहीं ?

उ० : है क्यों नहीं ? हाल में ही भारत में ही न्यूजीलेंड और वेस्ट इंडीज के विरुद्ध टैस्ट सीरीज खेली जा चुकी है । भारतीय टीम की कैप्टन शांता रंगास्वामी हैं । वह बहुत अच्छी बल्लेबाज हैं । हमारा मत है कि हमारी पुरुष टीम में इन्हें शामिल किया जाय तो हमारे कई बैट्समैनों से ज्यादा रन बनाएंगी (सुनील तथा विश्वनाथ को छोड़कर) ।


चाचा चौधरी
हाय ! मैं क्या करूं चाचाजी, उस गली के नुक्कड़ पर एक बदमाश मेरा सारा सामान छीन कर भाग गया।
हूं SSS उसकी यह हिम्मत ।
अब तो न जाने वह कहाँ जा चुका होगा ? मुझे कुछ सोचने दो।
आ गया आइडिया ! सुनो, तुम्हारे पास वह मोतियों का कीमती हार है न ?
उसको कच्चे धागे में पिरो कर और अपने गले में पहन कर ठीक उसी जगह पहुंच जाओ, बाकी तुम मेरे ऊपर छोडो।
चाचाजी अगर वह बदमाश मेरा कीमती हार भी लेकर भाग गया तो मैं क्या करूंगी ?
तुम फिक्र न करो। वह भाग कर नहीं जा सकता।
भाई लोगो अब देखना मेरा चमत्कार! शिकार जाल में अपने आप कैसे फंसता है।
गली के नुक्कड़ पर।
हा हा हा लाओ यह हार मेरे हवाले कर दो।
नहीं मैं यह हार नहीं दूंगी। तुम्हारी यह हिम्मत !



बदमाश झटके से हार को गले से खींचता है…
…लेकिन धागा कच्चा होने के कारण सब मोती बिखर जाते हैं।
अरे सामने चाचा चौधरी आ रहे हैं भागो।
जैसे ही भागने की कोशिश करता है बिखरे मोतियों पर से उसका पांव फिसल जाता है।
अरे! अरे! कोई बचाओ मैं गिरा।
फिकर न करो मैं आ गया हूं और मेरा भीमसैनी लट्ठ भी। इससे पहले कि मैं अपने भीमसैनी लट्ठ का मजा चखाऊं, सारा सामान इसके कदमों में लाकर रख दो।
चाचाजी इस लट्ठ को पीछे ही रखो, आप जैसा कहोगे मैं वैसा ही करूंगा।
ठीक है सारा सामान तो वापिस करदिया। अब आओ जरा हवा-पानी बदलने के लिए तुम्हें जेल की हवा भी खिला दूं।
पुलिस चौकी

# व्रत की महिमा

एक बार देवी पार्वती और भगवान शंकरजी दोनों पृथ्वी पर घूमने के लिए चल दिये। जंगल में चलते-चलते उन्होंने एक स्थान पर स्वच्छ जल का एक कुण्ड देखा, वहीं पीपल का एक वृक्ष भी था। सुन्दर विश्राम के योग्य जगह देखकर दोनों ने वहीं ठहरना उचित समझा। स्वच्छ जल पीकर शिवजी पीपल के वृक्ष के नीचे लेट गए। पार्वती जी उनके पैर दबाने लगीं। न मालूम क्यों, शिवजी को पार्वती के हाथों का स्पर्श कठोर प्रतीत हुआ। यह जान उन्होंने देवी पार्वती से कहा—

'मेरी सम्मति है कि यदि तुम किसी ब्राह्मणी की जचगी के समय सेवा करो तो तुम्हारे हाथ कमल के समान कोमल और मधुर हो जाएंगे।'

शिवजी महाराज की बात सुनकर पर्वत राज हिमाचल की पुत्री ने एक ब्राह्मणी की जचगी की सेवा की। इस सेवा से ब्राह्मणी बड़ी कृतज्ञ हुई और आनन्द से पुलकित हो गई।

तब पार्वतीजी ने उससे पूछा—'हे बहिन मुझे व्रतदान तथा उसे सम्पन्न करने की विधि-रीति आदि बताने की कृपा करें।'

ब्राह्मणी को पार्वतीजी की बात बड़ी प्रिय लगी। उसने एक बहुत ही श्रेष्ठ व्रत तथा उसकी विधि बताते हुए कहा—

'हे माँ! सुनो, सुहावनी हरी-भरी वर्षा ऋतु में आषाढ़ महीने की दशमी के दिन प्रथम गण भगवान् श्री गणेशजी की पूजा करनी चाहिए। पवित्र दूबदिल चढ़ाना चाहिए, मधुर मोदकों का भोग लगाना चाहिए और फिर ऊपर से गौ का घृत भी छोड़ना चाहिए। कार्तिक मास की दशमी के दिन ब्राह्मण को भोजन कराकर व्रत का पारण करना चाहिए।

इसी प्रकार भगवान् विष्णजी की पूजा भी करनी चाहिए। श्याम तुलसी-दल चढ़ाकर, खीर का भोग लगाना तथा ऊपर से गौ-घृत छोड़ना चाहिए और कार्तिक महीने में ब्राह्मणों को भोजन कराकर व्रत-समापन करना चाहिए।

इसी प्रकार नन्दी की भी पूजा करनी चाहिए। नन्दी को स्नान कराकर, अघाड़ा के पत्ते चढ़ावे, खिचड़ी का भोग लगाकर ऊपर से घृत छोड़े। पारण पर ब्राह्मण को अवश्य भोजन कराए। शिवजी की पूजा में बिल्व-पत्र तथा दही-चावल का भोग और घृत का चढ़ावा होता है। ब्राह्मणों का भोजन भी पारण के दिन होता है। शिवजी के साथ-साथ जगदम्बा पार्वती की पूजा भी करनी चाहिए। भगवती पार्वतीजी को स्नान कराकर, सफेद सुगंधित पुष्पों को चढ़ाना चाहिए। धारगे पूड़ी का भोग लगावे और कार्तिक मास में ब्राह्मणों को भोजन कराकर व्रत का पारण करे।

यह सब जानकर पार्वतीजी ने ब्राह्मणी से आगे पूछा—

'अच्छा, यह व्रत कब से आरम्भ करना चाहिए?'

'आषाढ़ मास की दशमी के दिन से आरम्भ करना चाहिए और कार्तिक महीने की दशमी को संपूर्ण करना चाहिए।' ब्राह्मणी ने उत्तर दिया। इसके बाद पार्वतीजी तुरन्त अदृश्य हो गईं।

इसके बाद सैकड़ों दिन, अनेक मास और कई वर्ष बीत गए। एक दिन पार्वतीजी ने दीनहीन स्त्री का भेष बनाया और बहुत ही दयनीय रूप धारण कर ब्राह्मणी के यहाँ गईं। उनके दयनीय रूप तथा गरीबी के भेष के कारण ब्राह्मणी ने उन्हें पहचाना नहीं, परन्तु उन्हें दरिद्र समझकर दया अवश्य दर्शाई।

पार्वतीजी को ब्राह्मणी का यह
देखकर बड़ा क्रोध आया। वह वहाँ
अपने पुत्र गणेशजी के पास गईं और
कहा—

'वह ब्राह्मणी, जिसकी मैंने
जचगी की थी, आजकल धन के कारण
हो गई है। हे पुत्र! तू उसका सा
वैभव हरण कर ले!'

गणेशजी ब्राह्मणी के विषय में
माता की शिकायत सुनकर पहले
गम्भीर हुए और फिर अपनी विवशत
करते हुए बोले—

'यह कैसे हो सकता है, माँ
ब्राह्मणी गर्वीली हो ही नहीं सकती।
चार मास तक मेरी पूजा की है, दूब
है, मुझे मधुर मोदकों का भोग चढ़
और ऊपर से घी भी डाला है। अ
क्यों कर उसका वैभव हरण कर स
माँ, मुझसे ऐसा अनुचित कार्य
सकेगा।'

अपने पुत्र की ये बातें सुनकर पा
प्रसन्न न हो सकीं। वह वहाँ से विष्ण
पास गईं। विष्णुजी तो भाई हैं, अव
कुछ प्रतिकार करेंगे। यह सोचकर
वहाँ पहुंचीं और उनसे कहा—'भाई!
के अपमान का प्रतिकार तुम्हें ही
पड़ेगा। अमुक ब्राह्मणी ने उपकार को
मेरा अपमान किया है। उसका वैभव
लो और तुम्हारी चहेती दरिद्र लक्ष्मी
दृष्टि उस पर हो। वह धन-धान्य औ
के कारण गर्व से अन्धी हो गई है।'

पार्वतीजी द्वारा ब्राह्मणी की शि
सुनकर विष्णुजी भी बड़े असमंजस



ः फिर सोचकर निश्चयपूर्वक प्रस-
गट करते हुए बोले—
ह मुझसे किस प्रकार हो सकता है,
वह कभी गर्वीली हो ही नहीं
उसने तो बड़ी भक्ति से मेरी चार
के पूजा की है। तुलसी-दल चढ़ाया
का भोग लगाया है और सुस्वादु गौ
ाया है। मैं क्योंकर उसके वैभव और
पत्ति को छीनूंगा ?'

हाँ से निराश होकर पार्वतीजी नन्दी
स पहुंचीं। शिवजी का वाहन नन्दी
का रखवाला भी था। पार्वतीजी के
पूरा भरोसा था कि नन्दी अवश्य ही
आज्ञा मानेगा। इसी विश्वास से
जी ने नन्दी से किस तरह ब्राह्मणी
कार भूलकर उनका अपमान किया और
से इस अपमान का बदला लेने के लिए
लगीं—

हे नन्दी ! धन और वैभव के कारण
ी अन्धी हो रही है। उसका सारा
छीन लो। उसे दरिद्र तथा दर-दर की
रिन बना दो; ताकि उसकी भविष्य की
ांखें खुल जाएँ।'

यह सुनकर नन्दी दुविधा के कारण कुछ
न कर सका और न कुछ देर तक वह
उत्तर ही दे सका, फिर बोला—'हे
ाता ! ब्राह्मणी बड़ी सद्गुणवती है।
मझ में नहीं आता कि उसके द्वारा
अपमान क्यों हुआ ? आप अपना
दलकर गई थीं। इसलिए उसने आपको
ना नहीं होगा। फिर भी गरीब दुःखी
कर दया प्रगट की। माता ! मुझसे
सुख और वैभव छीना नहीं जा
। यह कार्य करने में मैं सक्षम नहीं हूं।
मेरी पूजा चार मास की है। अघाड़ा-
चढ़ाए हैं। खिचड़ी का नैवेद्य चढ़ा-
पर से घृत भी डाला है। भला अपनी
न का अनिष्ट मैं कैसे कर सकता हूं।'

अन्त में पार्वतीजी शिवजी के पास ही
। पति के क्रोध से वे खूब परिचित
पूर्व जन्म में जब वे दाक्षायणी थीं और
ज में, जब उनका अपमान हुआ था, तब
ने वीरभद्र की सृष्टि की थी और यज्ञ
हुए सभी देवता, मुनि और तपस्वियों के
को काटकर यज्ञ का विध्वंस किया था।
जी इसी प्रचण्ड कोप से डरकर पहले
ति के पास नहीं गई थीं। परन्तु अब
पने पति के अतिरिक्त अन्य कोई
दिखाई नहीं दे रहा था, जो कि उनके अप-
मान का बदला ले, ताकि उन्हें सन्तुष्टि मिल
सके।

पार्वतीजी ने सारी बातें कह सुनाई और
कहा—'मैं अपने अपमान का बदला चाहती
हूं। वह ब्राह्मणी गर्वीली हो गई है। धन-
वैभव के मद से उसे कुछ दिखाई नहीं देता।
आप उसे धन-वैभव से हीन कर दर-दर की
भिखारिन बना दें।'

देवी पार्वती की बातें सुनकर शिवजी
बोले—

'हे चण्डी ! इस छोटी-सी बात के लिए
तुम्हें मेरे पास आने की आवश्यकता ही क्या
थी ? तुम स्वयं शक्ति-स्वरूपा हो। उसका
सर्वनाश स्वयं कर सकती हो। तुम्हारी भृकुटी
की वक्रता ही से उसका विनाश हो सकता
है।'

'मैं नहीं कर सकती उसका विनाश,
नाथ !' पार्वतीजी ने कहा—'उसने चार
महीने मेरी पूजा बड़ी भक्ति से की है। मुझे
स्नान कराकर सफेद सुगंधित पुष्पों से मेरी
अर्चना की है। घारगे पूड़ी का भोग अर्पण
किया है और ऊपर से गौ-घृत भी चढ़ाया है।
ब्राह्मणों को भोजन कराकर आशीर्वाद प्राप्त
किया है। मेरी उस पर कृपा हो गई थी।
फिर मैं स्वयं कैसे उसका वैभव हर सकूंगी ?'

शिवजी ने मुस्कराते हुए पार्वतीजी की
तरफ देखा और फिर कहा—

'हे अन्नपूर्णे ! जब तुम्हारी कृपा उस
पर है, तो मैं, अर्ध-नारीश्वर क्योंकर उसके
वैभव और सुख को छीन सकूंगा ? जिस
प्रकार उसने तुम्हारी पूजा की है, उसी तरह
मेरी पूजा भी उस ब्राह्मणी ने चार मास तक
की है। बेलपत्रों को चढ़ाया है, दही-भात का
भाग लगाया है और गौ-घृत भी चढ़ाया है।
उस निरभिमानिनी ब्राह्मणी का कोई भी कुछ
नहीं कर सकता, जिस पर अन्नपूर्णा स्वयं
तुष्ट है।'

अब पार्वतीजी की समझ में आ गया
कि व्रत की महिमा क्या है ? वे तो केवल
परीक्षा ही ले रही थीं।

फिर क्या था, अत्यन्त प्रसन्न होकर और
अमूल्य वस्त्रों तथा आभूषणों से सुसज्जित होकर
जगदम्बा पार्वतीजी ब्राह्मणी के सामने प्रत्यक्ष
उपस्थित हो गईं। दर्शन करते ही ब्राह्मणी
ने बहुत-बहुत आनन्दित होकर पूरे विधि-
विधान के साथ भगवती पार्वतीजी की पूजा
की और मनचाहा वरदान प्राप्त कर धन्य-
धन्य हुई। ● ●

# कितनी जासूसी आती है आपको

निम्न प्रश्नों का उत्तर हां या न में दें।
(सही उत्तर किसी और पृष्ठ पर छपे हैं)

१. दो जुड़वां भाइयों के अंगुलियों के निशान एक से होंगे ? हां/नहीं



२. हत्या स्थल पर कातिल के खून की कुछ बूंदें मिलें तो उससे लेबोरेटरी टैस्ट द्वारा यह पता लग सकता है कि कातिल पुरुष है या स्त्री ? हां/नहीं

३. एक किश्चिन विधवा द्वारा अपने पति को संखिया खिला कर मारने का संदेह है। क्या पति की मृत देह कब्र से तीन वर्ष बाद निकाल कर पोस्टमार्टम करें तो संखिये का पता लगेगा ? हां/नहीं

४. मृतक की देह से गोली मिली है। क्या केवल उस गोली से विशेषज्ञ यह पता लगा सकता है कि प्रयुक्त रिवाल्वर कौन से मेक का था ? हां/नहीं

५. क्या मनुष्य स्वयं अपना गला घोंट कर आत्महत्या कर सकता है ? हां/नहीं

६. एक पिस्तौल पर से नम्बर रेती द्वारा घिस कर मिटाये गये हैं। क्या लेबोरेटरी में नम्बर का पता लगाया जा सकता है ? हां/नहीं

## उत्तर :—

१. नहीं
२. नहीं
३. हां, संखिया शरीर में विद्यमान मिलता है
४. हां, विभिन्न मेकों की रिवाल्वरें गोली पर भिन्न प्रकार की खरोंचें छोड़ती हैं।
५. नहीं, बेहोश होते-होते हाथ खुद ढीले पड़ जायेंगे।
६. हां, नम्बर बहुत गहरे अंकित होते हैं। एक विशेष रसायन लगाने पर नम्बर उभर आते हैं।

# बात-बे-बात की


आप हमारे घर में एक महीने से मेहमान बन कर रह रहे हैं, आपके बीवी-बच्चों को आपकी याद आती होगी!
आप ठीक कहते हैं कि मेरे बीवी-बच्चों को मेरी याद आती होगी, इसलिए-
-आज ही मैं तार डाल कर उन्हें यहाँ बुला लेता हूँ!
काश! मैं ने बीवी-बच्चों की याद न दिलाई होती.
Sukhwant